सितम्बर-२०२० ◆ वर्ष ९ ◆ अंक ०५ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

सितम्बर-२०२०

पाप क्षमा होते नहीं,
निश्चित फल भुगतान।
शुभ कर्मों से प्रीति कर,
करते ऋषि आह्वान॥

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० १०७

दुनियाँ ने है माना
एम.डी.एच. मसालों का है जमाना
एम डी एच मसाले 100 से अधिक देशों को निर्यात किये जाते हैं।
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच - सच
Garam masala
Rajmah masala
Kitchen King
Sambhar
Sabzi masala
Deggi Mirch
Shahi Paneer masala
Kasoori Methi
Dal Makhani masala
Chunky Chat masala
Pav Bhaji masala
Chana masala
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 फोन नं० 011-41425106-07-08
ESTD. 1919
E-mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	- 1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२१
आश्विन कृष्ण पंचमी
विक्रम संवत्
२०७७
दयानन्दाब्द
१९६

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

September - 2020

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
3500 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

०४ वेद सुधा
१५ कोरोना काल ने मृत्यु लोक....
१९ मुंशी प्रेमचन्द और आर्यसमाज
२२ ऋषि दयानन्द द्वारा हिन्दी....
२५ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०४/२०
२६ वीरता की प्रतिमूर्ति हेलेना दत्त
३० सत्यार्थ पीयूष- कर्म-फल ....
समाचार २८
हलचल २९

स्वामी
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ९ अंक - ०५

द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर
मुद्रण

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 07976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

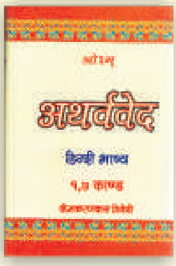

वेद सुधा

प्राणों से प्यारे !
हमारा सदैव कल्याण करो।

यदङ्गः दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेत्तत् सत्यमंङ्गिरः।। – ऋग्वेद १/१/६

ऋषिः मधुच्छन्दाः।। देवता– अग्निः।। छन्दः –गायत्री।।

विनय– हे प्रकाशमय देव! यह सच है कि स्वार्थत्यागी का कल्याण ही होता है, परन्तु संसार में ऐसा दिखाई नहीं देता। संसार में तो दीखता है कि स्वार्थमग्न लोग ही आनन्द-मौज उड़ा रहे हैं और स्वार्थत्यागी दुःख भोग रहे हैं। स्वार्थी, विजय-पर-विजय पा रहे हैं, दूसरों पर अत्याचार कर रहे हैं और स्वार्थत्यागी पुरुष सताये जा रहे हैं, परन्तु हे मेरे प्यारे देव! हे मेरे जीवनसार! आज मैं तेरी परम कृपा से सूर्य की भाँति यह स्पष्ट देख रहा हूँ कि आत्म-बलिदान करने वाले का तो सदा कल्याण ही होता है। इसमें कुछ संशय नहीं रहा; यह अटल है, बिल्कुल स्पष्ट है। संसार की ये दिखाई देने वाली घटनाएँ भी आज मेरी खुली आँखों के सामने से इस प्रकाशमान सत्य को छिपा नहीं सकतीं कि आत्मसमर्पण करने वाले के लिए कल्याण-ही-कल्याण है। मैं देखता हूँ कि संसार में चाहे कभी सूर्य टल जाए, ऋतुएँ बदल जाएँ, पृथिवी उलटी घूमने लग जाए और सब असंभव संभव हो जाए, परन्तु तेरा यह सत्य अटल है कि आत्म बलिदान करने वाले का अकल्याण कभी नहीं हो सकता– **'नहि कल्याणकृत् कश्चिद् दुर्गतिं तात गच्छति'** {'हे प्यारे! कल्याण करनेवाला कभी दुर्गति को नहीं प्राप्त होगा'}– कृष्ण भगवान् के गाये हुए ये सान्त्वनामय शब्द परम सच्चे हैं।

हे जीवन-के-जीवन! जब मनुष्य स्वार्थ को त्यागता है, आत्म-बलिदान करता है तो उस त्याग व बलिदान द्वारा हे कल्याणस्वरूप! वह केवल तेरे और अपने बीच की रुकावट का ही त्याग करता है, निवारण करता है और तेरे कल्याणस्वरूप को पाता है। भला, आत्म-बलिदान में अकल्याण का अवकाश ही कहाँ है? सचमुच, स्वार्थशून्य पवित्र पुरुषों पर आये हुए कष्ट, दुःख आपत् सब क्षणिक होते हैं। उनके सम्बन्ध में जो अक्षणिक है, सत्य है, अटल है, वह तो उनका कल्याण है।

शब्दार्थ– **अङ्ग**= हे प्यारे! **अङ्गिरः**= मेरे जीवनसार **अग्ने**= प्रकाशदेव! **यत् त्वम्**= जो तू **दाशुषे**= आत्म-बलिदान करने वाले का **भद्रम्**= कल्याण **करिष्यसि**= करता है **तत्**= वह **तव**= तेरा **सत्यं इत्**= सच्चा, न टलने वाला नियम है।

– आचार्य अभयदेव विद्यालंकार
(साभार– वैदिक विनय)

100 वर्षों में कुछ भी नहीं बदला

प्रायः ज्ञानीजन कहते हैं कि इतिहास केवल घटनाओं की जानकारी देने वाला नहीं होता। बुद्धिमान व्यक्ति वा कौम को चाहिए कि वह इतिहास का विश्लेषण कर दुर्घटनाओं के घटित होने में मूलभूत कारणों को समझे तथा भविष्य में उनकी पुनरावृत्ति को रोकने हेतु उन कारणों को दूर करने का प्रयास करे। इसके साथ ही एक और नियम है कि परिवार में सुख-शान्ति के आकांक्षी मुखिया को शान्ति भंग करने वाले सदस्य को पूर्ण निष्पक्षता के साथ चिह्नित करना चाहिए, तथा समझाने पर भी न समझने पर यथोचित् उपाय करने में नहीं हिचकिचाना चाहिए ताकि घर में 'वास्तविक साम्य' की स्थापना हो सके। आभासी शान्ति कुछ संतोष तो दे सकती है परन्तु स्थायी शान्ति नहीं। अफसोस है राष्ट्र-निर्माण का जिम्मा जिनके हाथों में था उन्होंने कठोरता व निष्पक्षता के साथ अपना दायित्व निभाने में प्रमाद किया जिसकी सजा आज तक राष्ट्र को भुगतनी पड़ रही है।

अभी कुछ दिन पूर्व एक पढ़े-लिखे शिक्षित नेता ने एक वक्तव्य दिया, जिसका भाव था कि- जो लोग मरने के बाद भी अपने मृत शरीर को राष्ट्र-भूमि को समर्पित कर उसे उर्वरा बनाने में सहायक हैं, क्यों नही राष्ट्र पर उनका पहला अधिकार होना चाहिए? बड़ा विचित्र और बेहूदा बयान है। हम इसका विश्लेषण करके जगह घेरना नहीं चाहेंगे, पर यह बयान उन पूर्व प्रधानमंत्री जी के बयान का अनुवर्ती ही है, जिन्होंने यह कहा था कि 'राष्ट्र के संसाधनों पर प्राथमिक अधिकार अल्पसंख्यकों विशेषकर मुसलमानों का होना चाहिए।' क्यों? कोई तर्काधारित उत्तर नहीं। बस यह सब उस परम्परा का पालन मात्र है, जिसमें निज के स्वार्थ के वशीभूत हो अथवा महानता की ख्याति से दमकने की इच्छा लिए कोई नेता जहाँ एक ओर, एक वर्ग में निरन्तर हठ और दुराग्रह करने की आदत पैठा देता है वहीं दूसरे पीड़ित पक्ष को दबाते-दबाते उस स्थिति तक पहुँचा देता है कि वह कभी भी फट सकता है, और इसमें किसी की हानि होती है तो केवल राष्ट्र की। मुझे यह लिखने में संकोच नहीं है कि ऐसा व्यक्ति चाहे कितने बड़े नाम वाला क्यों न हो, कितना बड़ा त्यागी-तपस्वी क्यों न हो, ऐसा करके वह स्वयं को अंततोगत्वा राष्ट्रघाती की श्रेणी में रख देता है।

इन दिनों वह समय चल रहा है जब स्वतंत्रता के आन्दोलन की किसी न किसी घटना की शताब्दी हो रही है। २०२० का समय खिलाफत आन्दोलन और असहयोग आन्दोलन के शताब्दी का वर्ष है। हम अपने एक मित्र से बात कर रहे थे, चर्चा उक्त खिलाफत आन्दोलन की थी और उनकी सोच थी कि अंग्रेजों के खिलाफ आन्दोलन था इसलिए उसे खिलाफत आन्दोलन कहा गया। उनकी इस अज्ञानता से जो प्रश्न मेरे मन में आया कि ऐसी सोच अनेकों की हो सकती है। मैंने इस विषय पर थोड़ा बहुत जितना चिन्तन किया है, तत्कालीन इतिहास को विभिन्न इतिहासकारों की नजर से पढ़ा है, मेरा दृढ़ विश्वास है कि 'खिलाफत' का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से कोई सम्बन्ध नहीं था, हिन्दू-मुस्लिम सहयोग की प्रबल आकांक्षा लिए कांग्रेस के तत्कालीन नेताओं ने विशेषरूप से गाँधी जी ने इसे जबरदस्ती भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का हिस्सा बना दिया।

अन्यथा निम्न बिन्दुओं पर आवश्यक रूप से विचार किया जाना चाहिए था कि- जिस प्रकार हिन्दू व अन्य अल्पसंख्यक राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग ले रहे थे, मुस्लिम भाईयों के भागीदार होने में गाँधी जी को शंका क्यों थी? खिलाफत के पक्ष में देश के अन्य

समुदाय खड़े हों न हों, उससे क्या अन्तर पड़ना चाहिए था? क्या 'खिलाफत' का भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन से दूर-दूर का नाता था? नहीं। यह इस्लाम के धार्मिक साम्राज्य की समस्या थी, जिसका आकार समय के चलते कम हो रहा था। स्वयं तुर्की में उसके खिलाफ आन्दोलन हो रहे थे, कमाल पाशा अतातुर्क के नेतृत्व में धर्मनिरपेक्ष शासन स्थापना की क्रान्ति चल रही थी, उस खलीफा के एकतंत्र को बचाने के लिए, धार्मिक साम्राज्य को कायम रखने के लिए धर्मनिरपेक्षता के पक्के समर्थक कांग्रेसी नेताओं को कूदने की क्या आवश्यकता थी? हमारे विचार में तो हमें किसी से सहानुभूति होनी चाहिए थी तो धर्मनिरपेक्ष शासन या सुधारों के लिए प्रयत्नशील तुर्की के जन आन्दोलन से। परन्तु हमारे तथाकथित धर्मनिरपेक्ष नेता तो उसका विरोध तथा धार्मिक निरंकुश एकात्मक शासक अर्थात् सुलतान अब्दुल हमीद-II का बचाव हर हद तक जाकर कर रहे थे।

संभवतः इसी कारण जिन्ना सहित अनेक नेताओं ने इसका खुलकर विरोध किया तथा गाँधी जी को समझाया भी कि मुस्लिम धार्मिक उलेमाओं को शह देना अंततः घातक होगा परन्तु जो मान जाय वो गाँधी क्या? हाँ! यह अवश्य मानना होगा कि गाँधी जी में कोई चुम्बकीय शक्ति थी जो उनके गलत निर्णय में भी अंततः सब शामिल हो जाते थे।

लोकमान्य तिलक खिलाफत के समर्थन के पक्ष में न थे।

पंडित इन्द्र विद्यावाचस्पति ने 'भारतीय स्वाधीनता संग्राम का इतिहास' में लिखा है- 'गाँधी जी ने असहयोग की नीति का पूरा विवरण प्रकाशित किया तब तिलक महाराज के क्रान्तिकारी हृदय को वह बहुत पसन्द आया। वह गाँधी जी से केवल एक बात में स्वराज्य के साथ खिलाफत को नत्थी करने के विरुद्ध थे। परन्तु ३१ जुलाई की रात को लोकमान्य तिलक के निधन के बाद कांग्रेस की कमान पूरी तरह गाँधी जी के हाथों में आ गई।'

'ऐसा प्रतीत होता है कि गाँधी जी मुसलमानों का साथ लेने के लिए इतने उत्सुक थे कि वे कुछ भी करने को तैयार थे।' प्रश्न यह उठता है कि देश की स्वतंत्रता के प्रश्न पर बिना किसी अतिरिक्त प्रलोभन के, मुस्लिम बन्धुओं को साथ क्यों नहीं आना चाहिए था? क्या यह उनका देश नहीं था? पर अली बन्धु असहयोग आन्दोलन को उत्साहपूर्वक समर्थन देने को तभी तैयार थे जब खिलाफत के प्रश्न को कांग्रेस प्रमुखता से उठाये। मुस्लिम समाज की यही मानसिकता आज तक भी विडम्बना बनी हुयी है।

इन्द्र विद्यावाचस्पति उपरोक्त पुस्तक में लिखते हैं- 'गाँधीजी ने देशवासियों को बतलाया कि खिलाफत का मामला मुसलमानों के लिए जीवन-मरण की समस्या का समाधान है। खिलाफत बचती है तो इस्लाम बचता है खिलाफत मरती है तो इस्लाम मरता है। अब इस अन्याय का विरोध करने के दो ही उपाय हैं। हिंसात्मक विद्रोह या सरकार से अहसयोग। हिंसा स्वयं महापाप है। उससे कोई समस्या स्थायीरूप से हल नहीं हो सकती। ऐसी दशा में केवल असहयोग ही एकमात्र उपाय रह जाता है।'

हमने माना कि अंग्रेजों ने प्रथम विश्वयुद्ध में मुसलमानों को शामिल करने के लिए जो वायदे किये थे उन्हें तोड़ दिया था पर ऐसा तो उन्होंने अनेक स्थलों पर किया था। गाँधी जी ने 'खिलाफत' के मुसलमानों के लिए महत्त्व के बाबत् जो कहा वह भी सही मान लिया जाय फिर भी खिलाफत कायम रखने की मांग भारत राष्ट्र की मांग कैसे बन सकती है? गाँधी जी अपने खोखले तर्क से परिचित थे पर वे हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए इतने लालायित थे कि उन्होंने खिलाफत को मुसलमानों की गाय बताने जैसा हास्यास्पद तर्क दिया। इसका अर्थ था कि हिन्दू अगर खिलाफत के प्रश्न पर मुसलमान भाइयों के साथ खड़े रहें तो वे गौवध करना बन्द कर देंगे। अर्थात् न्याय के मार्ग पर भी वे तब चलेंगे जब उन्हें कुछ दिया जाय। देन-लेन की इसी पद्धति की आदत आज तक भी अल्पसंख्यक समाज को पड़ी हुयी है, और लेख के प्रारम्भ में कुछ नेताओं के जो वक्तव्य हमने दिए हैं वे इसी मानसिकता को cash करने हेतु उद्धृत हैं।

बकौल गाँधी भारत के मुसलमानों को 'खिलाफत' उतनी ही प्रिय थी जितनी हिन्दुओं को गाय। पर उन्होंने यह नहीं सोचा कि अरब के जो लोग खिलाफत के विरुद्ध थे, वे क्या मुसलमान नहीं थे? युवा तुर्क नेता कमाल पाशा और उनके वे साथी जिन्होंने अंततः तुर्की को खलीफा के एकतंत्र धर्म-राज्य से आजाद कराया, यहाँ तक कि धर्मनिरपेक्षता की मिसाल बनाने हेतु हागिया सोफिया जैसी प्रसिद्ध मस्जिद के स्थान पर वहाँ संग्रहालय बना दिया, क्या वे लोग मुसलमान नहीं थे? मैं यह भी सोचता हूँ कि क्या अफगानिस्तान का अमीर मुसलमान नहीं था? उसने खिलाफत को बचाने के लिए क्या किया? १०-२० सहस्र मुसलमानों के अफगानिस्तान में हिजरत हेतु आने पर ही उसकी हालत खराब हो गयी और उसने २०वीं शताब्दी की इस हिजरत पर ही रोक लगा दी।

यहाँ खिलाफत को जब तक ठीक से न समझा जाएगा तब तक यह पूरा प्रकरण समझ में नहीं आयेगा, यह सोचकर अति संक्षेप में निम्न विवरण देना चाहते हैं- मुहम्मद साहब के निधन के पश्चात् जो सर्वाधिकारी उनकी जगह नियुक्त होता था उसे खलीफा कहा जाता था। वह मुहम्मद साहब का उत्तराधिकारी ही समझा जाता था। अल्लाह तथा रसूल के अतिरिक्त खलीफा को मानना इस्लाम में अनिवार्य हो गया। (शिया मुसलमान खिलाफत की निरन्तरता को नहीं मानते)। धीरे-धीरे खलीफा की शक्ति बढ़ती गयी यहाँ तक कि उनके अधीन के ओटोमन साम्राज्य में कभी यूरोप, अरब के कुछ भाग एवं अफ्रीका के उत्तरी तटवर्ती इलाके थे। इस समय यह सर्वाधिक शक्तिशाली साम्राज्य था। समय के बीतने के साथ विश्व में नयी विधाओं को अपनाने का उपक्रम चलता रहा परन्तु खलीफाओं ने उनमें रुचि नहीं दिखायी। परिणामस्वरूप धीरे-धीरे साम्राज्य का विरोध बढ़ता गया। बुल्गेरिया इससे अलग हुआ। साम्राज्य सिकुड़ता गया। बाल्कान युद्ध के बाद तुर्की साम्राज्य वैसे ही बहुत सिकुड़ गया था।

२२ अक्टूबर को बुल्गारिया ने सिर्थ किलेसे नामक स्थान पर टर्की की सेना को बुरी तरह परास्त किया। ८ नवम्बर को ग्रीस की सेना ने टर्की की सेना को सेलोनिका के स्थान पर परास्त कर अपना अधिकार स्थापित किया और मेसिडोनिया के तुर्क साम्राज्य का अन्त कर दिया। इस प्रकार डेढ़ महीने के अन्दर ही टर्की को बाल्कन राज्यों से बुरी तरह परास्त होना पड़ा और उसके पास यूरोप का बहुत कम भाग शेष रहा। इस समय तक तो ब्रिटेन का कोई सीधा दखल भी नहीं था। लन्दन तथा बुखारेस्ट की सन्धि से गुजरते हुए अनेक क्लिष्ट घटनाओं के पश्चात् प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् उपरोक्त स्थिति आयी, जो कि कतई नयी नहीं थी। खिलाफत का अन्त तो होना ही था। इस सारे मामले में ब्रिटेन के अतिरिक्त अन्य देश भी शामिल थे। क्या केवल ब्रिटेन खिलाफत को बदस्तूर रख सकता था? यह भी संदेहास्पद ही था।

इन सब बातों से गाँधी जी व अन्य राजनीतिज्ञ क्या अनभिज्ञ थे? स्पष्ट है नहीं। इसलिए खिलाफत को प्रथम शर्त बनाने में 'न्याय' से अधिक, मुस्लिम भाइयों के मध्य लोकप्रिय होने की गाँधी जी की 'चाह' अधिक प्रतीत होती है।' जहाँ तक तुर्की के खिलाफ अन्याय का प्रश्न है तो तुर्की के द्वारा १५ लाख आर्मेनियनों के नर संहार को क्या कहा जाएगा? यद्यपि इस नरसंहार के बारे में आज बात करना भी तुर्की में अपराध माना जाता है, फिर भी इस सन्दर्भ में निम्न अवतरण अवलोक्य है-

The University of Minnesota's Center for Holocaust and Genocide Studies has compiled figures by province and district that show there were 2,133,190 Armenians in the empire in

1914 and only about 387,800 by 1922. लगभग १७ लाख नागरिक कहाँ गए?

जब गाँधी जी 'खिलाफत' को कायम रखने के लिए आन्दोलन चला रहे थे, उसी समय तुर्क जनता उसे खत्म करने हेतु जूझ रही थी। सामान्य बुद्धि से भी खिलाफत के उद्देश्य समर्थन योग्य नहीं थे। तुर्की साम्राज्य बनाए रखने का मतलब था कई देशों को तुर्की का उपनिवेश बनाए रखना। हम भारतीय उस समय उपनिवेश वादियों के विरुद्ध अपनी अस्मिता के लिए लड़ रहे थे तो उसी समय तुर्की के उपनिवेशों को बनाए रखने के लिए किस आधार पर उद्यत हो सकते थे?

पर गाँधी जी ने यंग इंडिया (२ जून, १९२०) में लिखा, 'मेरे विचार से तुर्की का दावा न केवल नैतिक एवं न्यायपूर्ण है, बल्कि पूर्णतः न्यायोचित् है, क्योंकि तुर्की वही चाहता है जो उसका अपना है। गैर-मुस्लिम और गैर-तुर्की जातियाँ अपने संरक्षण के लिए जो गारण्टी आवश्यक समझें, ले सकती हैं, ताकि तुर्की के आधिपत्य के अन्तर्गत ईसाई अपना और अरब अपना स्वायत्त शासन चला सकें।' (गाँधी जी द्वारा यह तब कहा जा रहा था जबकि ओटोमन साम्राज्य में ईसाइयों के लिए आवश्यक था कि वे २० प्रतिशत पुरुष बच्चों को शासन को सौंप दें जिन्हें गुलाम बनाया जाता था देखें-

In the 14th century, the devshirme system was created. This required conquered Christians to give up 20 percent of their male children to the state. The children were forced to convert to Islam and become slaves.The devshirme system lasted until the end of the 17th century.)

गाँधी जी ने आगे लिखा, 'मैं यह विश्वास नहीं करता कि तुर्क निर्बल, अक्षम या क्रूर हैं।' यह भी गलत था, क्योंकि तुर्कों ने आर्मेनियाई जनसंहार (१९१५) किया था। उसमें दस-पन्द्रह लाख ईसाई आर्मेनियाई लोगों का तुर्कों ने सफाया किया। उन्हीं को गाँधी जी दयालु कह रहे थे। वस्तुतः तो विश्वभर में सभी शासन पद्धतियों में अन्याय के विरुद्ध आवाज उठती रहती है, ओटोमन साम्राज्य के पतन का यही मुख्य कारण था।

एक विद्वान्, युवा तुर्क आन्दोलन के बारे में लिखते हैं-

Young Turks was a political reform movement in the early 20th century that consisted of Ottoman exiles, students, civil servants, and army officers. They favored the replacement of the Ottoman Empire's absolute monarchy with a constitutional government. Later, their leaders led a rebellion against the absolute rule of Sultan Abdul Hamid II in the 1908 Young Turk Revolution. With this revolution, they helped to establish the Second Constitutional Era in 1908, ushering in an era of multi-party democracy for the first time in the country's history.

उपरोक्त संक्षिप्त विवरण यह स्पष्ट करने के लिए काफी है कि तुर्की का विघटन उसके अपने कारणों से अवश्यम्भावी था। यहाँ यह भी विचार करें कि किसी देश की जनता के आत्मनिर्णय के अधिकार में, उन लोगों द्वारा जो स्वयं इसी प्रकार का संघर्ष कर रहे हों, अवरोध उत्पन्न करना कहाँ तक उचित है? प्रथम विश्वयुद्ध तो इस प्रक्रिया में ताबूत की अंतिम कील बन गया। खलीफा के अस्तित्व को समाप्त करने के लिए जिस देश के नागरिक स्वयं संघर्षरत् हों, जहाँ प्रथम विश्वयुद्ध में अनेक देश सम्मिलित हों वहाँ अकेले ब्रिटेन निर्णय कर भी नहीं सकता था, इन तथ्यों को भलीभाँति समझते हुए भी मुस्लिम भावनाओं को तुष्ट करने के लिए गाँधी जी और कांग्रेस ने खिलाफत का समर्थन किया जबकि भारत और भारतीयता से इसका कुछ लेना देना नहीं था। बढ़ते हुए राष्ट्रवादी चिन्तन के उस युग में खलीफा के धार्मिक साम्राज्य की परिकल्पना का टिके रहना कठिन ही था। खिलाफत आन्दोलन चीख-चीख कर कह रहा है कि आज से १०० वर्ष पूर्व जिस अल्पसंख्यक तुष्टीकरण को हवा दी गयी थी मनमोहन सिंह और शशि थरूर उसी को निरन्तरता देने का प्रयास कर रहे हैं। क्रमशः .....

- अशोक आर्य
चलभाष- +919314235101, +918005808485

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वि-जन्मशताब्दी लेखमाला

(फरवरी–2024 तक प्रतिमाह एक लेख)

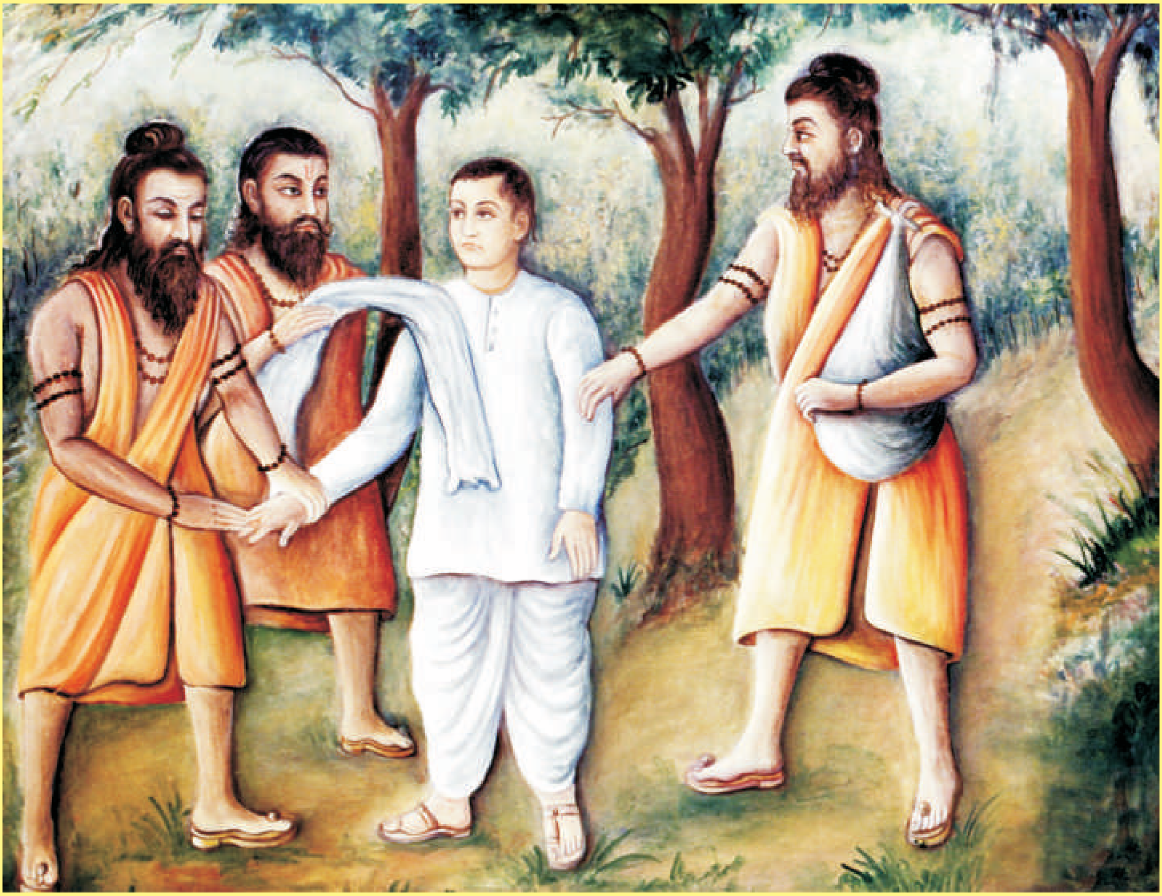

गृहत्याग के पश्चात् योगियों की खोज में सर्वप्रथम सायला ग्राम को उन्होंने अपना गन्तव्य बनाया। उस समय वे बेशकीमती कपड़े व अंगूठियों को धारण किए हुए थे। रास्ते में वैरागियों के वेश में ठगों के दल से उनकी मुलाकात हुई। उन्होंने इनको वस्त्र व गहनों को त्यागने के लिए राजी कर लिया। मूलशंकर तो अब तक वैराग्य के रंग में रंग चुके थे। अतः इन भौतिक चीजों को त्यागने में उनको तनिक भी संकोच नहीं हुआ। उन्होंने आभूषण उतार कर उन कपट वेशधारी साधुओं के आगे फेंक दिए और इस प्रकार अनन्त पथ का यात्री अपने गन्तव्य की ओर अग्रसर हुआ।

शुद्धि चक्र चलाने को ऋषि दयानन्द आये थे

गतांक से आगे ....

जैसा कि हमने देखा कि हिन्दुओं का धर्मान्तरण बल-छल लोभ-लालच का प्रयोग कर ईसाइयों अथवा मुस्लिमों ने किया। इस को प्रमाणित करने हेतु हमने कुछ संकेत भी दिए यद्यपि इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है। परन्तु इस धर्मान्तरण के चलते आर्य (हिन्दू) जाति को जो नुकसान हो रहा था उसकी ओर से हिन्दू समाज सोया पड़ा था। उसके अंग-प्रत्यंग कट रहे थे वह बेखबर था। इस खतरे को १९वीं शताब्दी में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अनुभव किया। इसके कारणों पर विचार किया। जहाँ कहीं ऐसे धर्मान्तरण हुए जिनमें स्वेच्छा की हलकी झलक भी थी उसमें सर्वप्रमुख हिन्दुओं की उच्च जातियों के घटकों द्वारा निम्न जातियों पर अत्यन्त अमानवीय और अपमानजनक व्यवहार का प्रयोग अन्तर्निहित था। इस अमानवीय और अपमानजनक व्यवहार के सन्दर्भ में एक उदाहरण देना चाहेंगे।

१९२१ में मालाबार में खिलाफत आन्दोलन की असफलता से खीज कर मुसलमानों ने, जो मोपले कहलाते थे वहाँ के हिन्दुओं का जो नरसंहार किया और अमानवीय अत्याचार किये, उन पर स्वातंत्र्यवीर वीर सावरकर ने उपन्यासात्मक शैली में अत्यन्त मार्मिक अंकन करते हुए पुस्तक लिखी है 'मोपला- अर्थात् इससे मुझे क्या?' इसमें उन्होंने उच्च जाति के हिन्दुओं द्वारा तथाकथित निम्न जातियों के साथ अमानवीय व्यवहार का भी वर्णन किया है। उसकी प्रस्तावना में स्वामी सम्पूर्णानन्द जी ने जो लिखा है वह यहाँ उद्धृत करते हैं- वे लिखते हैं कि '......इस सबका कारण हमारी वैदिक संस्कृति, वैदिक धर्म, वैदिक विचारधारा या कहिए वैदिक जीवन पद्धति का हमारे जीवन से लोप हो जाना था। जिस वृक्ष की जड़ों को दीमक ने खा लिया हो फिर वह आँधी का सामना नहीं कर सकता है, वह एक दिन मिट्टी में मिलकर अपना अस्तित्व खो बैठता है। यही हुआ इस अभागे आर्यावर्त्त के साथ। .... अगर इस पतन के कारणों में से दो प्रमुख कारण छांटने हों तो मैं कहूँगा छूआछूत और मूर्तिपूजा। .... छूआछूत ने आर्य हिन्दू जाति को तोड़ने में उल्लेखनीय भूमिका निभायी है और आज भी एक हद तक यह समस्या विद्यमान है।

मालाबार इलाके में हिन्दुओं में व्याप्त इस छूआछूत का वर्णन सावरकर करते हैं। हिन्दुओं में नम्बोदरी ब्राह्मण सबसे ऊँचे हैं नम्बोदरियों से नीचे नायर हैं जिनको ब्राह्मण कहते हैं कि ये शूद्र हैं। इन दोनों जातियों के अतिरिक्त एक और जाति है जिसका नाम है तिया। इस जाति को मालाबार में चारों वर्णों से बाहर समझा जाता है। उन्हें आज्ञा थी कि वे ब्राह्मण व

नायरों से २४ फीट दूर रहें। तिया लोग ब्राह्मणों के घरों व

तालाबों में नहीं जा सकते थे। हिन्दुओं का विनाश करने वाली इस बीमारी का विकराल रूप आप एक मुकदमे के माध्यम से देख सकते हैं। फरवरी १९१९ को कालीकट में एक मुकदमा हुआ। मामला यह था कि एक ब्राह्मण मि. शंकरन आयर की माताजी के पेट में भयंकर दर्द हुआ। मि. आयर माताजी के उपचार के लिए डॉ. चोई को बुला लाये जो एक तिया थे। रास्ते में एक तालाब पड़ता था। डॉ. चोई उस तालाब से गुजर कर मि. आयर के घर पहुँच गए। इसी पर डॉ. चोई एवं मि. आयर पर मुकदमा कर दिया गया कि उन्होंने तालाब को अपवित्र कर दिया। छह माह तक मुकदमा चलता रहा। हिन्दू जाति का दुर्भाग्य देखिए कि उस समय के बड़े-बड़े प्रसिद्ध वकीलों, ग्रेजुएट एवं पढ़े-लिखों ने यही गवाही दी कि बेशक एक तिया के गुजरने से तालाब अपवित्र हो जाता है। मि. एन. गोपाल, वकील हाइकोर्ट, मद्रास उस समय के प्रख्यात वकील भी दावेदारों के एक गवाह थे। डॉ. चोई के वकील ने जिरह करते हुए कुछ प्रश्न किए जिनमें से कुछ विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं।

प्रश्न- यदि एक तिया हिन्दू रहते हुए तालाब के पास से गुजरना चाहे तो गुजर सकता है या नहीं?

उत्तर- नहीं गुजर सकता।

प्रश्न- यदि वह तिया ईसाई बन जाये तो क्या वह इस तालाब के पास से गुजर सकता है या नहीं?

उत्तर- हाँ! गवर्नमेन्ट के बनाये हुए कानून के अनुसार वह तालाब के पास से गुजर सकता है।

प्रश्न- यदि डॉ. चोई मुसलमान बन जाये तो क्या वह तालाब से गुजर सकता है?

उत्तर- हाँ गुजर सकता है।

हाय! दुर्भाग्य, हिन्दू जाति का कि एक गौरक्षक रहते हुए तालाब पर से गुजर नहीं सकता है परन्तु गौ भक्षक बन जाने पर गुजर सकता है और तालाब भी अपवित्र नहीं होगा।' आगे लिखा है 'हा! दुर्भाग्य हिन्दू जाति का कि एक कुत्ते और जंगली जानवर द्वारा तालाब का पानी पीने से तालाब अपवित्र नहीं होता। तालाब के अन्दर रहने वाले मेढ़क, कछुआ, मछली आदि प्रजातियों से और पानी में ही मल-मूत्र का त्याग करने से भी तालाब अपवित्र नहीं होता। प्राणियों में श्रेष्ठ मानव योनि में जन्म लेने वाले मनुष्य से तालाब मात्र इसलिए अपवित्र हो गया कि उसने कथित एक नीची जाति में जन्म ले लिया।'

इस पुस्तक में सावरकर जी ने एक घटना को अपनी कलम से पिरोते हुए लिखा है कि- '............ जब मोपलों ने उसके (स्थूलेश्वर शास्त्री) के सामने ही एक लड़की को निर्वस्त्र करके बलात्कार किया और हरिहर शास्त्री द्वारा छोटी लड़की को एक दलित के हाथों लड़की के मामा के यहाँ सुरक्षित पहुँचाने का प्रस्ताव रखा तो स्थूलेश्वर शास्त्री तमककर बोला- नहीं। नीच जाति के व्यक्ति के साथ भेजने से अच्छा है कि मोपले मुसलमान ही ले जायें।' यह हिन्दू जाति के दुर्भाग्य की गाथा है। इसी छूआछूत का विधान आप अलग-अलग जाति की नायर या ब्राह्मण की अलग-अलग दूरी के रूप में देख सकते हैं। तिया जाति-२४ फीट दूरी। मस्कून- २४ फीट की दूरी। कनिसन- ३६ फीट की दूरी। यलावन- ६४ फीट की दूरी। नायाड़ी- ७२ फीट की दूरी। हाय रे हिन्दू जाति मक्खी, मच्छर, कुत्ते, बिल्ली, धीरड़, ततैये से दूरी की कोई निश्चित सीमा नहीं। परन्तु मनुष्य की मनुष्य से दूरी इससे कम नहीं हो सकती। भारत के टुकड़े किसने किये क्या विदेशियों ने? नहीं बिल्कुल नहीं। जातिगत छूआछूत ने। उक्त वक्तव्य से स्पष्ट होता है कि जातिगत छूआछूत आर्य जाति का सबसे बड़ा कलंक तथा सबसे बड़ा तोड़क था। अतः महर्षि दयानन्द जी ने इसको जड़ से मिटाने के लिए सर्वाधिक प्रयास किया।

अस्पृश्यता के इस कलंक के चलते १९ फरवरी १९८१ के दिन तमिलनाडु के मीनाक्षीपुरम् में ३०० परिवारों के ७००

सदस्यों ने एक साथ सामूहिक रूप से इस्लाम ग्रहण कर लिया। जहाँ गाँव में दो मुस्लिम परिवार थे वहाँ इस घटना के बाद गाँव का नाम बदलकर रहमत नगर रख दिया गया। वस्तुतः कहानी यहाँ भी वही थी। गाँव के सवर्ण थेवर जाति के लोगों से गाँव के दलित दुःखी थे। कुछ मौलवियों ने इस स्थिति का लाभ उठाना चाहा। उन्होंने खाड़ी में अपने मित्रों से बात की। गुपचुप लोगों का आना-जाना प्रारम्भ हो गया।

खाड़ी के देशों में नौकरियों का प्रलोभन दिया गया। किसी को पता नहीं चला। फिर अचानक एक दिन धर्मान्तरण की उक्त घटना घट गयी। पूरे देश में हडकंप मच गया। तत्कालीन प्रधानमंत्री अटलबिहारी बाजपेयी ने भी मीनाक्षीपुरम् का दौरा किया। हिन्दुओं ने भी इसे एक चेतावनी के तौर पर लिया। कहा जाता है कि विश्व हिन्दू परिषद् की स्थापना इसके बाद हुयी। आर्यसमाज ने पूरे देश में धर्म-रक्षा महाभियान चलाया। देश भर में आर्यसमाजों ने दलित बस्तियों में हवन-प्रवचन के कार्यक्रम रखे। दलितों को यज्ञोपवीत प्रदान कर उन्हें यज्ञ में प्रमुख रूप से बिठाया। दलितों के साथ बड़े-बड़े सहभोज आयोजित किये गए। यह आर्यसमाज के उस संकल्प की अभिव्यक्ति थी जिसमें अस्पृश्यता को समूल नष्ट करने की भावना सन्निहित थी। इस घटना की जाँच के लिए वेणुगोपाल समिति का गठन किया गया जिसने सवर्णों के दलितों के प्रति व्यवहार को इस घटना के मूल में माना। आर्यसमाज ने मीनाक्षीपुरम् में एक विद्यालय भी खोला। कुछ घर वापिसी भी हुयी। पर पुनः सबक यही था कि हिन्दू समाज को अस्पृश्यता को पूर्णतः विदाई देनी होगी अन्यथा इस प्रकार की घटनाएँ होती रहेंगी।

महर्षि दयानन्द ने भली प्रकार समझ लिया कि जब तक यह 'ऊँच-नीच' की खाई न पाटी जायेगी तब तक हिन्दू मतान्तरण होता रहेगा। इसी को और भड़काकर ईसाई आदि भी मतान्तरण में संलग्न रहते हैं। अतः महर्षि दयानन्द इस समस्या को जड़मूल से उखाड़ने का प्रयत्न करते हैं और एक सीमा तक उन्हें और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज को इसमें सफलता भी मिलती है। दलितोद्धार के इस प्रसंग को हम पूर्व के आलेखों में दे चुके हैं।

धर्मान्तरण का परिणाम हिन्दुओं की घटती जनसंख्या में भी स्पष्ट दिख रहा था जो कि उन दिनों की जनगणना रिपोर्टों से स्पष्ट था।

Jones write-' The hindu leaders were horrified by what appeared to them to be a move to diminish the size of Hindu community through redefining that category in the census reports. In addition, they saw this is another element of the Anglo-Muslim plot against their own community. (Religious identity and the Indian census' in Barrier, N. G. (Ed), The census of British India, New perspectives, 1981, p.92)

यह सब हो रहा था पर रूढ़िवादी हिन्दुओं का विचार था कि जो एक बार विधर्मी हो गया हिन्दू समाज के दरवाजे उसके लिए सदा के लिए बन्द हो गए। पंडित गंगा प्रसाद उपाध्याय लिखते हैं-

'The pauranic pundits had established it firmly that a non Hindu could not become a Hindu and a Hindu once ousted for howsoever a petty cause, **no amount of purificatory penances were considered enough by the puranic pandits to readmit him back to the Hindu fold** (Christianity in India- Pandit Gangaprasad Upadhyaya)

वस्तुतः तो कभी-कभी किन्हीं कारणों से पूरा का पूरा गाँव मत परिवर्तित कर लेता था पर उस नए धर्म को हृदय से स्वीकार नहीं कर पाता था और वे अपने पुराने रीति-रिवाजों और धार्मिक अभिचारों का अनुकरण करते रहते थे पर हिन्दुत्व में वापिसी की राह उनके लिए कभी नहीं खुलती थी। यह अत्यन्त विडम्बनापूर्ण स्थिति थी जिसका नुकसान हिन्दू समाज को पहुँचना ही था।

इस मानसिकता को बदलना आवश्यक था। स्वामी दयानन्द ने इस ओर ध्यान दिया और उन्होंने स्वयं ही शुद्धि का शुभारम्भ कर दिया। उन्होंने इस विषय पर मार्गदर्शन करने में कोई संकोच नहीं किया। एक बार जब कश्मीर के राजा ने जिज्ञासा की, तो प्रत्युत्तर में स्वामी जी ने उन्हें वेदों के आधार पर घर वापिसी का समर्थन करते हुए लिखा।

उन्होंने देहरादून में एक जन्मना मुस्लिम मुहम्मद उमर को १८७८ में वैदिक धर्म में दीक्षित किया। बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय प्रणीत स्वामी दयानन्द के जीवन चरित्र से कतिपय सन्दर्भ उल्लेखनीय हैं-

चालीस हिन्दू युवक ईसाई होने से बचे- अमृतसर में लगभग चालीस हिन्दू नवयुवकों के विचार मिशन स्कूल में ईसाई मत की शिक्षा पाने और ईसाइयों के संसर्ग से ईसाई मत की ओर झुक गए थे। वे नाममात्र के हिन्दू रह गये थे और हृदय से ईसाई हो गए थे, यहाँ तक कि वे अपने को बपतिस्मा न पाये हुए ईसाई (Unbaptised Christian) कहने लगे थे और उन्होंने अपनी एक अलग सभा बना ली थी जिसका नाम Prayer Meeting (उपासना सभा) रख छोड़ा था और प्रति रविवार को उसका अधिवेशन हुआ करता था। जब उन्होंने (स्वामी दयानन्द जी) महाराज के उपदेश सुने और वैदिक धर्म की सच्चाईयाँ और ईसाई मत के भ्रममूलक सिद्धान्त उन पर प्रकट हुए, तब ईसाई होने से बचे।

विचित्र परिवर्तन- एक व्यक्ति पंडित खड्गसिंह पादरी

बेरिंग के उपदेश से ईसाई हुए थे और उन्हें ईसाई हुए बारह वर्ष हो चुके थे। वे ईसाई धर्म के एक स्तम्भ समझे जाते थे। पादरी साहब ने उन्हें महाराज से शास्त्रार्थ करने के लिए

उनके ग्राम में अमृतसर बुलाया और जब वे आ गये तो पादरी साहब ने कहा कि पंडित साहब आ गये हैं, अब अच्छी तरह शास्त्रार्थ होगा।

पादरी साहब इधर स्वप्न देख रहे थे कि उनके दिग्गज पंडित अजेय दयानन्द को परास्त करके ईसाइयों का सिर ऊँचा करेंगे, उधर परमेश्वर की कुछ और ही लीला हो रही थी।

पंडित खड्गसिंह बाबूसिंह के गृह पर बाबू ज्ञानसिंह से मिले और उनसे कहा कि आप जानते हैं वह कौन है? जिससे शास्त्रार्थ करने के लिए मुझे बुलाया गया है। बाबू ज्ञानसिंह ने कहा कि उनका नाम दयानन्द सरस्वती है और वे सरदार भगवान सिंह के बाग में ठहरे हुए हैं, आप अवश्य चलिए। एक दिन अपराह्न चार बजे बाबू ज्ञानसिंह पंडित खड्गसिंह को महाराज के निवास स्थान पर ले गए। पंडित खड्गसिंह प्रणाम करके महाराज के समीप बैठ गए। उसके पश्चात् जो दृश्य बाबू ज्ञानसिंह ने देखा, वह अदृष्टपूर्व था उसे देखकर वह आश्चर्य सागर में मग्न हो गए। हुआ यह कि महाराज से एक ब्राह्मण धर्म विषय पर बातचीत कर रहा था। स्वामी जी उसके प्रश्नों का उत्तर दे रहे थे, अब पंडित खड्गसिंह उसे उत्तर देने लगे। ब्राह्मण ने कहा मैं तो स्वामी जी से बातें कर रहा हूँ, आप बीच में क्यों बोलते हैं? तो पंडित जी ने कहा कि यदि मेरे उत्तर से आपको सन्तोष न होगा तो स्वामी जी से पूछ लेना। पंडित खड्गसिंह उसी क्षण से ईसाई नहीं रहे थे, वे महाराज के पक्के अनुयायी बन गए थे। बाबू ज्ञानसिंह उन्हें अपने घर ले गये और उनका आतिथ्य सत्कार किया। उसके पश्चात् उन्होंने वैदिक धर्म का उपदेश देना आरम्भ कर दिया। उनकी दो कन्याएँ थीं। उनका विवाह भी उन्होंने आर्यों में किया।

पादरी बहुत घबराए- पादरी बेरिंग साहब और अन्य पादरी इस घटना से बहुत घबराये और उन्होंने कलकत्ते के प्रसिद्ध पादरी के. एन. बनर्जी को शास्त्रार्थ के लिए तार द्वारा बुलाया, उनका उत्तर आया कि मैं आता हूँ। महाराज अमृतसर छोड़ने वाले थे, परन्तु उनसे प्रार्थना की गई कि के. एन. बनर्जी कलकत्ते से आ रहे हैं, आप अभी न जाइये। इसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया, परन्तु जब फिर के.एन. बनर्जी को तार दिया गया कि आप शीघ्र आवें तो उनका उत्तर आया कि मेरी पुत्री रोगग्रस्त है, मैं नहीं आ सकता।

पादरी से बहुत कुछ कहा गया कि एक लड़की मर जावे तो क्या हानि है, वह मरकर मसीह की गोद में जाती है, इसमें क्या भय है। यहाँ अनेक आत्माओं (रूहों) का कल्याण है, पादरी साहब न आये। इसका यह परिणाम हुआ कि कई लोगों के विचार ईसाई मत से फिर गए और वे आर्यसमाज के सभासद बन गए।

रईस के पुत्र ईसाई होने से बच गए- देहरादून के एक रईस के दो पुत्र थे, जो अंग्रेजी पढ़े हुए थे। उन पर ईसाइयों ने अपना रंग जमा रखा था और वे ईसाई होने को तैयार थे। हिन्दुओं को तो वे तर्क में चुटकियों में परास्त कर देते थे। विवश होकर उनके पिता ने उनसे कहा कि तुम छह माह तक का विज्ञापन दो कि यदि कोई इस अन्तर में ईसाईमत को असत्य सिद्ध न कर सकेगा तो वे ईसाई हो जायेंगे। किसी हिन्दू धर्माभिमानी का यह साहस न हुआ कि ईसाईमत का निकृष्टत्व और हिन्दू धर्म का श्रेष्ठत्व सिद्ध करके हिन्दू धर्म की इन लतिकाओं की रक्षा करता। जब (स्वामी दयानन्द जी) महाराज देहरादून पधारे तो छह मास की अवधि में केवल दो चार दिन ही शेष रह गए थे। महाराज को जब यह समाचार ज्ञात हुआ तो उन्होंने इन दोनों भाईयों को अपने पास बुलाया। ईसाई मत पर बातचीत होने लगी। उन दोनों ने देखा कि जो तर्क शिला के समान दीख पड़ते थे और विपक्षियों के उठाये न उठते थे, वे महाराज के तर्क वज्र से छिन्न-भिन्न हुए जाते हैं। अन्त में उन्हें ईसाईमत का असारत्व स्वीकार करना पड़ा और उन्होंने ईसाई होने का विचार छोड़ दिया। महाराज ने उनसे बहुतेरा कहा कि पादरियों को हमारे पास लाओ, परन्तु पादरी किसी प्रकार भी महाराज के सामने आने पर सम्मत न हुए। पादरियों ने उन लड़कों को कई प्रकार की धमकियाँ भी दीं कि यदि तुम ईसाई न होओगे तो साहब कलक्टर तुमसे रुष्ट हो जायेंगे परन्तु वे इन धमकियों में न आये। उनके पिता ने महाराज के इस उपकार के बदले में कुछ धन महाराज की भेंट करना चाहा,

परन्तु उन्होंने स्वीकार न किया और कह दिया कि इस धन से संस्कृत की पाठशाला बना दो।

महात्मा अलखधारी पूर्व मुहम्मद उमर- मुंशी मुहम्मद उमर को महाराज ने पहले आगमन के अवसर पर शुद्ध करके उनका नाम अलखधारी रखा था। एक दिन मुसलमान दलबद्ध होकर उनके पास पहुँचे और उनसे कहा कि तेरी मुक्ति असंभव है और तू कठोर यातना के योग्य है। महात्मा अलखधारी ने कहा कि 'आपका खुदा मुसलमानों का पालन करता है वा मनुष्यमात्र का। यदि पहली बात ठीक है तो आपको मेरे उद्धार की विशेष चिन्ता करनी व्यर्थ है और यदि दूसरी ठीक है तो फिर मुझमें और आप में कोई भेद नहीं। उत्तम तो यही है कि आप भी पवित्र वेदों के विश्वासी बनें और सत्यधर्म को ही सत्य जानें अन्यथा छुटकारा कठिन है।' ऐसा युक्तियुक्त उत्तर पाकर इस्लामी दल वापस चला गया।

स्वामी जी के उद्यम का मूल्यांकन करते हुए डॉ. के. पी. सिंह अपनी पुस्तक 'Aryasamaj Movement' में लिखते हैं-

His objective was to infuse a new strength to the Hindu society by bringing about a change in the mental attitude of the people from defensive, passive and submissive to positive, dyanamic, bold and assertive. This is how, he thought, Hinduism could be saved.

स्वामी जी के प्रारम्भ किये कार्य को उनके पश्चात् आर्यसमाज ने और तीव्रता से विस्तार दिया जिसमें पंडित लेखराम तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। जिन्होंने मत-जनित संकीर्णता का निर्भयता से सामना करते हुए मतान्धों के हाथों मृत्यु का वरण किया। आर्यसमाज के शुद्धि-प्रयासों का विस्तार से विवरण देने योग्य स्थान का अभाव है अतः अगले अंक में केवल संकेत कर इस प्रकरण को समाप्त करेंगे।

- अशोक आर्य

कार्यकारी अध्यक्ष-न्यास

चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

सत्यार्थ सौरभ घर-घर पहुँचावें।

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल

अध्यक्ष - न्यास

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें "सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

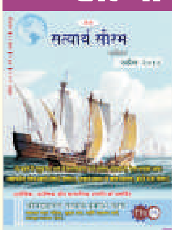

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

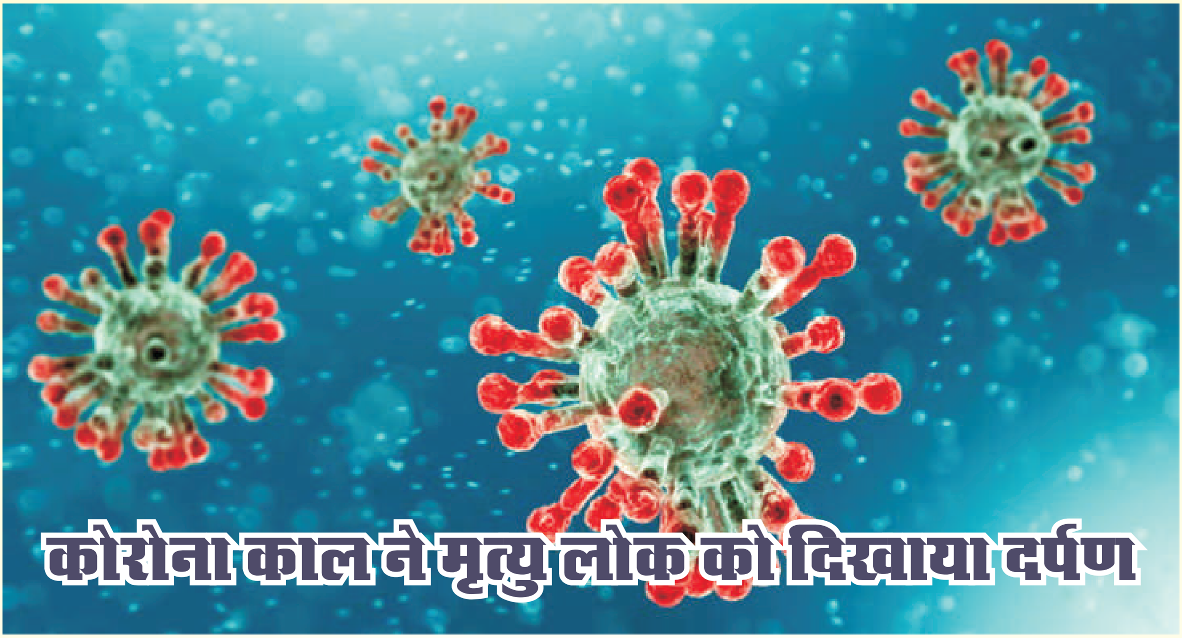

कोरोना काल ने मृत्यु लोक को दिखाया दर्पण

दिसम्बर २०१६ तक मृत्युलोक (संसार) में नित्यानुसार सामान्य जीवन शैली चल रही थी। चुनावी दौर, विविध खेल, व्यापार, कृषि, विद्यालयों-महाविद्यालयों में पढ़ाई, विरोध, रैलियाँ, मांगलिक कार्यक्रम, शत्रुद्रोह, लूट, भ्रष्टाचार, घोटाले, राष्ट्रनायकों का विश्वभ्रमण (अन्य राष्ट्रों में आवाजाही) छोटे से राष्ट्र से लेकर संयुक्त राष्ट्रसंघ तक अपनी नियतिनुसार सब सामान्य अवस्था में गतिशील थे। पानी में उठती लहरों की तरह घटनाएँ घटित हो रही थीं। लहरों की तरह मृत्युलोकवासी सब कुछ आनन्द-पीड़ा के रूप में जीवन व्यतीत कर रहे थे। सूर्य-चन्द्र, तारे, ब्रह्माण्ड में नियमित गतिशील रहकर अपनी व्यवस्था में पूर्ण ईमानदारी से जुटे थे। चन्द्र पर मानवों द्वारा जो कूड़ा कचरा जमा किया गया, उसकी शिकायत मृत्युलोकवासियों से करते हुए सचेत कर चेता दिया था कि यह मेरे साथ अन्याय हो रहा है। यह हाल रहा तो मैं मृत्युलोकवासियों की खबर लूँगा। इधर सूर्य ने भी अपनी बढ़ती तपन से चेतावनी दे डाली कि यदि और ज्यादा अत्याचार किया तो मैं मृत्युलोक को समाप्त कर दूँगा। वो भी बुरी तरह जलाकर भस्म कर दूँगा। धरतीवासी प्रकृति का दोहन जिस रूप में कर प्रकृति को पीड़ा पहुँचा रहे हैं उसके फलस्वरूप वे परिणाम भोग रहे हैं। पवन देव, वरुण देव सभी ने अपनी नजर टेढ़ी कर ली व सचेत करते हुए अपने स्तर पर दण्डित कर चेता दिया। २०१६ में वरुण देव ने अतिवृष्टि कर धरतीवासियों को चेताया। उससे पूर्व अल्पवृष्टि, ओलावृष्टि, वायु, चक्रवात, आंधी-तूफान से भयंकर क्षति कर संकेत दे दिया कि अपनी भोग इच्छा पर लगाम लगाओ। परन्तु मृत्युलोकवासी प्रकृति पर विजय पाकर प्रकृति को अपनी दासी बनाना चाहते हैं। प्रगतिशील कहे जाने वाले राष्ट्र किसकी क्यों सुनें?

वहीं दूसरी ओर विश्व का प्रगतिशील राष्ट्र चीन जो सर्वभक्षी, दानवी विचारधारा का पोषक, स्वार्थी, बेईमान, चोर, लम्पट, संसार के समस्त घृणित कार्यों में अग्रणी, स्वस्वार्थ हेतु अन्यों पर अत्याचार कर निर्दयता की मूरत, विज्ञान के सहारे प्रकृति- दोहन के साथ अत्याधुनिक भोगवादी राष्ट्र की खोटी सोच ने अपनी कोख में पल रही सम्पूर्ण विश्वसत्ता को हथिया कर सारे संसार पर शासन करने की लालसा जन्म ही नहीं लेती है, शीघ्र ही बलवती होकर अपना हुनर दिखाने को मचलने लगती है। चीन कनाडा से जैविक हथियार सामग्री की चोरी कर अपने उत्कृष्ट वैज्ञानिकों की लम्बी साधना से प्राणघातक जैविक हथियार का निर्माण करने लगा। यह कार्य

वह चुपचाप कर रहा था। कारण चीन अपनी गोपनीयता भंग नहीं होने देता। चीन अपने आपको छुपा कर रखता है। चीन का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष स्वरूप दोनों अलग-अलग ही रूप में आपको देखने को मिलेगा। उसकी इसी नीति का परिणाम चीन की दीवार का बनाना जो संसार के आश्चर्यों में से एक है। भारत के कानों में भनक भी नहीं पड़ने दी। नेहरू सरकार सोती रही। कैलाश मानसरोवर पर चीन का कब्जा, अन्य राष्ट्रों की सीमा को हथियाना चीन का पुराना शौक रहा है।

सभी जानते हैं चीन अपनी मदारिन भाषा में सारा कार्य व्यापार करता है। गूगल का उपयोग चीन नहीं करता। फेसबुक, वाट्सअप यूजर आदि उसके अपने हैं। वो भी पूरी तरह टॉप सीक्रेट। इसका कारण चीन की कोई भी बात, कोई भी गतिविधि विश्व के समक्ष नहीं आती है। दिसम्बर में वुहान शहर में उसका जैविक हथियार कोविड-१९ का जन्म होता है। जो घातक जीवाणु बम है। हमारे यहाँ एक कहावत है जो औरों के लिये गड्ढा खोदता है वह खुद उसमें पहले गिरता है। चीन पहले इस कोविड-१९ कोरोना का शिकार हुआ। कोरोना का प्रकोप पहले वुहान में हुआ। चीन का वुहान शहर इसकी चपेट में कैसे आया? कोरोना वायरस के फैलने से कितनी जनहानि हुई निश्चित आंकड़े बताना मुश्किल है। इसे चीन की सोची समझी चाल कहें, घिनौना षड्यन्त्र कहें, चीन में यह केवल वुहान शहर में ही हावी रहा है। चीन की राजधानी व व्यापारिक शहर बीजिंग, शंघाई आदि शहरों को छुआ भी नहीं। यह एक गोपनीय-सोचनीय प्रश्न है।

एक और गजब मजे की बात डब्ल्यू.एच.ओ. (वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाईजेशन) के प्रेसिडेन्ट जब कोरोना का कहर चीन में अनगिनत जानें ले रहा था तब वे वहीं थे। उनकी रिपोर्ट यह थी कि यह छुआछूत से नहीं फैलेगा। यूजर पर उनकी यह घोषणा पढ़ी जा सकती है। यह चीन का षड़यंत्र डब्ल्यू. एच. ओ. की मिलीभगत का खेल भी कह सकते हैं। १२ दिसम्बर २०१९ को विश्व पटल पर खबर उभरी कि चीन में कोरोना वायरस ने आतंक मचा दिया। चीन में अफरा-तफरी, कई मौतें, अनगिनत इसकी चपेट में। संक्रमक चीन इस भयावह महामारी को मूर्त रूप देने हेतु विश्व के कई राष्ट्रों में हवाई यात्रा द्वारा अन्य राष्ट्रों में कोरोना वायरस फैला चुका था। इस बीच चीन की कोरोना पर विजय की खबर आई। चीन ने कोरोना पर नियंत्रण कर लिया, कोई नवीन प्रकरण दर्ज नहीं हुए हैं। उपग्रहों से खींचे गये चित्रों से पता चला कि चीन की धरती पर हजारों-हजार लाश जलाई गईं जिसके कारण चीन में लाल धुंए का अम्बार छाया है। लेकिन चीन ने अपनी आदत अनुसार पूरे विश्व को अंधेरे में रखा। कोरोना महामारी को फैलाने के महापाप से निष्कलंक रखते हुए चीन ने बहुत कुछ छिपाया।

कोरोना प्राकृतिक वायरस नहीं है। विश्व के वैज्ञानिक भी इसके प्रकोप से हैरान हैं। अन्य राष्ट्रों का तापमान एक जैसा नहीं। वहाँ का जलवायु एक सा नहीं लेकिन प्रकोप का सभी राष्ट्रों में एक सा भयंकर रूप से देखने को मिला है। जापान के नोबेल पुरस्कार विजेता प्रो. डॉ. टासुकू होंजो ने चुनौती पूर्ण दावा कर विश्व पटल पर यह सत्य उजागर किया कि- 'कोरोना वायरस प्राकृतिक नहीं है बल्कि बनाया गया वायरस है।' वुहान शहर के अतिरिक्त कोरोना का प्रभाव चीन में अन्यत्र बहुत ही कम जीरो प्रतिशत पर रहा है। वुहान शहर घनी आबादी वाला शहर है। ऐसी भी खबर है कि चीन अपने यहाँ की आबादी कम करना चाहता था। बड़ी ही चतुराई से उसने इस कार्य को अंजाम दे दिया। इस बात का खुलासा मोबाईल कम्पनियों के द्वारा पता चला कि बड़े स्तर पर लोगों ने फोन का उपयोग बन्द कर दिया। यह उन्हें हेल्थ कार्ड के आधार पर पता चला जिसकी संख्या चोरी छिपे उजागर हुई करीब ८० लाख लोगों के, जबकि बीच में कहीं पढ़ने में आया था कि २-५ करोड़ लोगों के मोबाईल बन्द। वो लोग कहाँ गये यानि मर गये।

कोरोना दर्पण की तरह है जो वास्तविकता को उजागर कर रहा है। हम सोचें वुहान में कोरोना पैदा हुआ। वुहान से शंघाई मात्र ८३९ किलोमीटर दूर वहाँ इसका प्रकोप नहीं। वुहान से बीजिंग ११५२ किमी दूरी पर। दूसरी ओर वुहान से मिलान १५००० किमी वुहान से न्यूयार्क १५००० किमी, भारत, इटली, स्पेन, फ्रांस आदि राष्ट्रों की दूरी को देखें वहाँ कोरोना काल बन कर टूटा। चीन की राजधानी, आर्थिक व ऊर्जावान शहर शंघाई सुरक्षित, वुहान शहर में कोरोना

वायरस का उठा तूफान शीघ्र ही शान्त। कुछ तो षड्यंत्र है, बहुत कुछ गड़बड़ी का पता विश्व पटल पर चीन की नीच वृत्ति, नियति का खुलासा हुआ, पता चला।

चीन इस कोरोना को जैविक हथियार (जीवाणु बम) के रूप में भारत, इजराईल, जापान व अमेरिका के खिलाफ करना चाहता था। लेकिन चीन का दुर्भाग्य ही कहा जाए कि काजल की कोठरी में कितो ही सयाना जाय, आखिर भाया दाग लागे ही लागे है। पूरा विश्व चीन की इस हरकत से परेशानी में आ गया। कोरोना को लेकर आखिर चीन पर दाग लग ही गया।

एक सोचने की बात है कि चीन ने ऐसी घटना को विश्व से छिपाकर मूर्त रूप क्यों दिया? सीधा सा उत्तर समझ में आता है कि चीन अपनी ताकत हर क्षेत्र में बढ़ाने के लिये साजिश रचता है। जिस डॉ. ने जानकारी दी, वह मारा गया। जिस रिपोर्टर ने खबर छापी थी उसका कहीं पता नहीं। चीन महाशक्तिशाली राष्ट्र के रूप में सम्पूर्ण विश्व पर शासन करना चाहता है। इसी कारण से कोरोना नामक वायरस पूरे विश्व में फैला दिया। पूरा विश्व अपनी जनता को बचाने में जुटा है। सारे राष्ट्र अपने-अपने देशवासियों को बचाने में दिन-रात जुटे हुए हैं। सेना, पुलिस, सफाईकर्मी और चिकित्सक-नर्स सभी जुट गये कोरोना से पीड़ित रोगियों को बचाने में। पूरे विश्व की आर्थिक व्यवस्था डगमगा गई। चीन समृद्ध हो रहा है। कारण मास्क से लेकर किट, वैक्सीन, दवाई तक चीन बेच रहा है। अमेरिका, फ्रांस आदि राष्ट्र ४०० मिलियन यूरो में खरीद कर अपनी-अपनी जनता को बचाने में लगे हैं। टेलिविजन व समाचार पत्रों में सारी खबरें चीन की घिनौनी साजिश को उजागर कर रहे हैं। इस बीच चीन ने अपनी सीमा पर जहाजी बेड़े तैनात कर दिए। जांबाज सिपाहियों की ८० कम्पनियाँ सीमा पर भेज दीं। तोपें तैयार। उधर जापान और ताइवान ने भी चीन की हीन हरकत को भाँपते हुए अपनी सीमा पर पूर्ण तैयारी कर ली। तृतीय विश्वयुद्ध चीन करने के लिये तैयार खड़ा है। चीन की आर्थिक स्थिति बहुत मजबूत हो गई है। अन्य राष्ट्रों की आर्थिक स्थिति रसातल में चली गई। लाखों मरीज कोरोना की चपेट में। लॉकडाउन के चलते कार्य व्यापार प्रभावित।

मोदी जी की सूझबूझ के चलते जनता कर्फ्यू से लेकर लॉकडाउन में हवाई जहाज, बस-रेल सभी बन्द। ऐसे में हमारी आर्थिक स्थिति पर जो प्रभाव पड़ा है, सोच कर देखें। भारत की स्थिति अन्य राष्ट्रों की अपेक्षा काफी अच्छी है। यदि दिल्ली में आप सरकार तुगलकी-थुगलगी जमात को प्रश्रय नहीं देती तो भारत अभी तक कोरोना मुक्त हो गया होता। तुगलकी जमात के इन जेहादियों ने जेहादी बम के रूप पूरे भारत में कोरोना को फैला दिया। पूरे भारत में टीवी चैनलों ने इसका पूरा संज्ञान भारतवासियों के समक्ष रखा है। भारत की जनता व सरकार इनके खिलाफ क्या ठोस कदम उठायेंगे वो भविष्य के गर्भ में है। राष्ट्र खतरे में मोदी जी के आह्वान पर देश के भामाशाहों ने अरबों रुपये का दान दे दिया। जन सहयोग खुलकर होने लगा।

कोरोना काल के दर्पण ने जो दिखाया उस आधार पर भारतवासी चीन से किसी भी प्रकार का व्यापार नहीं करें। कभी एक पोस्टर देखा था- भारतीय सैनिक कह रहा है सीमा पर मैं नहीं घुसने दूँगा। बाजार में चीन को तुम मत घुसने दो। आज हम शपथ लें कि चीन का हम कोई भी उत्पाद नहीं खरीदेंगे।

अमेरिका ने खुलासा किया कि चीन के पास १५०० प्रकार के और घातक वायरस हैं। सम्भवतः भविष्य में सारे कोरोना प्रभावित राष्ट्र एकजुट हो चीन से इसकी इस घिनौनी हरकत

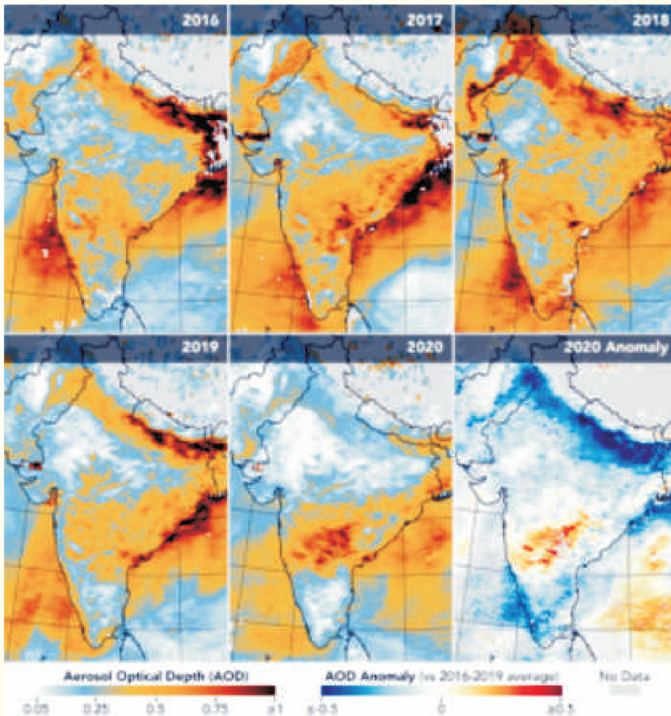

का बुलन्दी के साथ जवाब मांगें, चीन पर एक साथ दबाब बनाकर उसे शक्तिहीन कमजोर करने, बनाने में सफल हों। कोरोना के चलते धरती पर से प्रदूषण काफी हद तक समाप्त हो गया। आकाश, नदियाँ, वायुमण्डल सभी स्वच्छ हो गये। लोगों को जीने का सनातनी ढंग रास आ गया। स्वच्छता

खान-पान, रहन-सहन व दैनिक जीवन में वैदिक संस्कृति पूर्ण रूप में छलकने लगी। भारतीय संस्कृति पुनः जीवित हो उठी। मांसाहार से घृणा हो गई। हाथ जोड़कर अभिवादन का प्रचार खूब बढ़ गया। हाथ मिलाना छूत की बीमारी समझ लोग भूल गये। लॉकडाउन के चलते अपराध का ग्राफ भी घटा है। सड़क दुर्घटना घटीं। लव जिहाद के प्रकरण भी शासन तक नहीं पहुँचे। पारिवारिक प्रेम पनपा, संगत, पंगत एक साथ होने से पारिवारिक प्रेम बढ़ने लगा।

कोरोना काल में पुलिस, सेना, चिकित्सक एवं सफाईकर्मियों की भूमिका अतिवन्दनीय, सराहनीय रही है। किन शब्दों में उनकी प्रशंसा करें, शब्द उद्यान में, शब्द नहीं हैं। फिर भी कुछ दुष्टवृत्ति के लोगों ने इनके साथ मारपीट कर जो काला

इतिहास रचा, वो क्षमा के योग्य नहीं है। इन तुगलकी जमात को क्षमा नहीं किया जाय। भारत की वर्तमान स्थिति को पैदा करने वाले ये जिहादी जमाती ही हैं। मोदी जी को चाहिये कि सबका साथ-सबका विकास सबका-विश्वास से पवित्र नारे को कलंकित करने वालों को उचित दण्ड दें। भारत ने मोदी जी की आवाज पर जनता कर्फ्यू का पालन किया। एक आवाज पर तालियाँ, थालियाँ बजा दीं, दीप मशाल जला दीं। उधर इन तुगलकी-थुगलकी जमात ने जो किया उसका प्रभाव भारत में जिस रूप में पड़ा ९७ प्रतिशत जनता कितनी दुःखी हुई। जनता की राय मोदी जी जानें। तुष्टीकरण व वोट की राजनीति छोड़ शक्ति से इन तुगलकी जिहादियों को कठोर दण्ड दें। आपके प्रति जनता की अगाध श्रद्धा है। उस श्रद्धा का मजाक न बने।

कोरोना वृद्धि का दूसरा कारण प्रान्त यदि अपने यहाँ प्रवासी श्रमिकों को पूर्ण समर्थन व सहयोग करते उन्हें प्रान्त छोड़ने पर मजबूर नहीं करते तो भारत में कोरोना महामारी का इतना विकराल रूप नहीं बनता। श्रमिकों के पलायन की गाथा भारत माता के इतिहास में अश्रुपूरित कलंकित अध्याय जुड़ गया है। उस दृश्य का वर्णन करते लेखनी कांपती है। वह दृश्य मोदी सरकार को असफल बनाने, कलंकित करने व घृणित राजनीति का ही एक अंग था, इस पर चिन्तन करना होगा।

सभी भारतवासी स्वस्थ रहें। ऐसी परमपिता परमात्मा से कामना है। पूरा राष्ट्र भगवा हो, विश्वगुरु बन संसार का नेतृत्व करे। आसुरी शक्तियों का विनाश हो। इन्ही शुभकामना के साथ लेखनी को विराम दे रहा हूँ। इति शुभम् भूयात् ।

– डॉ. पं. लक्ष्मीनारायण सत्यार्थी
पूर्व राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री
अ. भा. जांगिड़ ब्राह्मण महासभा, दिल्ली

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतनलाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, श्री सुदर्शन कुमार कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर

मुंशी प्रेमचन्द और आर्यसमाज

क्रमशः ......

मुंशी प्रेमचन्द, यह नाम सुनते ही २०वीं शताब्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार का नाम स्मरण हो उठता है। जिन्होंने अपनी लेखनी से समाज सुधार का ऐसा सन्देश दिया जो पढ़ने वालों को आज भी प्रभावित किये बिना नहीं रहता। प्रेमचन्द के साथ एक बड़ा अन्याय भी हुआ। अपना नाम चमकाने के चक्कर में अनेक लेखकों ने उनके साथ छल किया। उनके सुधारवादी दृष्टिकोण को देखते हुए कोई उन्हें साम्यवादी बताता है, कोई मार्क्सवादी, कोई गाँधीवादी बताता है। सत्य यह है कि मुंशी प्रेमचन्द १९वीं सदी में आरम्भ हुयी क्रान्ति के पुरोधा स्वामी दयानन्द के क्रान्तिकारी चिन्तन से प्रभावित थे। स्वामी दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना करते हुए अपने अकाट्य तर्कों और युक्तियों से धार्मिक अन्धविश्वास और रूढ़िवादी संकीर्णताओं की बुनियादें हिला दी थीं। आर्यसमाज के सामाजिक सुधार आन्दोलन में प्रेमचन्द अपनी लेखनी के माध्यम से रण के शूरवीर बने। प्रेमचन्द की लेखनी में सुधारवादी और शिक्षात्मक स्वर सुनाई देता है।

प्रारम्भ में प्रेमचन्द ने उर्दू में लिखना आरम्भ किया। असरारे माबिद, हमखुर्बा व हमसवाब और किशना उनकी प्रारम्भिक उर्दू कृतियाँ थीं। हिन्दी अनुवाद 'गबन' और 'प्रेमा' नाम से छपे थे। इन ग्रन्थों में प्रेमचन्द ने धर्म के नाम पर शोषण करने वाले महन्तों व पुजारियों की पोल खोली। जैसे एक आर्यसमाजी प्रचारक धर्म के नाम पर चल रही कुरीतियों का भंडाफोड़ करता है। कालान्तर में 'प्रतिज्ञा' के नाम से उपन्यास लिखा। इस उपन्यास का पात्र अमृतराय विधवा विवाह, वह भी अन्तर्जातीय करने का दुस्साहस उस काल में करता है। समाज अमृतराय के विरुद्ध है, पर उसके मन में तो जाति-उन्नति का सपना है, जिस काल में कोई इस विषय में सोच भी नहीं सकता था। यह चिन्तन प्रेमचन्द को आर्यसमाज के विधवा विवाह अभियान से मिला।

प्रेमचन्द के अगले उपन्यास 'वरदान' में देशोद्धार समाहित है। उपन्यास के चरित्र नायक बालाजी हैं जो समाज सुधार के लिए समर्पित हैं। गाँव के बच्चे भूखे मरते हैं। बालाजी उनके कल्याण के लिए गौशाला खुलवाकर उन्हें दूध पिलाते हैं। समाज के निर्धन बच्चों पर ऐसा उपकार करने का सन्देश स्वामी दयानन्द ने ही तो दिया था। जिसे प्रेमचन्द ने अपनी लेखनी से उकेरा।

प्रेमचन्द आर्यसमाज के सदस्य भी बने।

फरवरी, १९१३ में मझगाँव से निगम को लिखा- 'मेरे जिम्मे हमीरपुर आर्यसमाज के दस रुपये बाकी हैं। बार-बार तकाजा हुआ है, मगर तंगदस्ती ने इजाजत न दी कि अदा कर दूँ। आप अगर एफोर्ड कर सकें तो बरारास्त मेरे नाम से हमीरपुर आर्यसमाज के सेक्रेटरी के नाम दस रुपये का मनीआर्डर कर दें। ममनून हूँगा। तकलीफ तो होगी मगर मेरी खातिर इतना सहना पड़ेगा क्यूँकि यहाँ अब जलसा भी अनकरीब होनेवाला है। मुकर्रर अर्ज यह है कि यह दस रुपये जरूर भेज देवें। मैंने जनवरी में अदा करने का इतमी वायदा किया है।'

एक महीने के बाद फिर याद कराया- 'अगर आपने हमीरपुर समाज के नाम दस रुपये रवाना न किए हों तो बराहे करम अब कर दीजिए, क्यूँकि मैं १४ मार्च को वहाँ जाऊँगा और

तकाजा नहीं सहना चाहता।'

इस जलसे पर आर्यसमाज के प्रचारक मौलवी महेश प्रसाद आलिम फाजिल अपने साथियों के साथ प्रेमचन्द के आवास पर ठहरे। उनकी वार्तालाप के विषय दो थे। पहला आर्यसमाज और उसके कार्य से सम्बन्धित। दूसरे महोबा में ईसाई मिशनरियों द्वारा हिन्दू लड़के-लड़कियों को ईसाई बनाना।

इसी चिन्तन का परिणाम हम प्रेमचन्द की अगली कृति खूने सफेद में पढ़ते हैं। इस कृति में एक अकाल ग्रस्त परिवार के बच्चे को ईसाई पादरी क्रिश्चियन बनाकर पढ़ने के लिए पुणे भेज देता है। जब वह लौट कर आता है तो उसका परिवार तो उसे अपनाना चाहता है। मगर उसका समाज उसके विधर्मी बनने के कारण उसे स्वीकार नहीं करता। वह युवक यह कहकर कि- 'जिनका खून सफेद है। मैं उनके बीच में नहीं रह सकता' चला जाता है। प्रेमचन्द अपनी इस कृति में ईसाई धर्मान्तरण और उसके सामाजिक प्रभाव पर एक आर्यसमाजी के समान चिन्तन प्रस्तुत करते हैं।

आर्यसमाज के देश को स्वतंत्र करवाने के चिन्तन से भी प्रेमचन्द प्रभावित हुए बिना न रहे। सरकारी नौकरी में होते हुए भी प्रेमचन्द ने 'सोजे वतन' के नाम से उपन्यास लिखा जो देश प्रेम की पाँच कहानियों का संग्रह था। पुस्तक जब्त हुई। प्रेमचन्द को धमकी मिली कि आगे से कुछ भी लिखने से पहले सरकार से इजाजत लेनी होगी। प्रेमचन्द ने नाम बदलकर नवाब राय के नाम से 'वरदान' लिखा। इसके चरित्र सुवामा की इच्छा स्वामी दयानन्द के समान देशसुधार की है। अंग्रेजी की नाक के तले ऐसे पंगे लेने वाला कोई आर्यसमाजी ही उस काल में हो सकता था। प्रेमचन्द उन्हीं में से एक थे।

१९२० के दशक में भारत हिन्दू-मुस्लिम दंगों में जल उठा। प्रेमचन्द जानते थे कि इन दंगों के पीछे अंग्रेज हैं। आपने नवी का नीति निर्वाह, फातिहा, मंदिर और मस्जिद, कर्बला लिखे। 'कायाकल्प' में उन्होंने मुसलमानों को ईद पर गौवध से रोका। 'कायाकल्प' में हिन्दुओं और मुसलमानों के मध्य हुए संवाद का सन्देश सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में दिए गए सन्देश से मिलता है।

प्रेमचन्द हिन्दी के बड़े पक्षधर थे। उर्दू से आरम्भ कर हिन्दी में आये। स्वामी दयानन्द देवनागरी के माध्यम से देश को एक सूत्र में जोड़ने का सन्देश दे गए। प्रेमचन्द उसी सन्देश को अपने उपन्यास 'वरदान' में देते हैं। इस उपन्यास के पात्र मुंशी संजीवनलाल अपनी पुत्री बिरजन से कहते हैं कि 'बेटी, तुम तो संस्कृत पढ़ती हो। जिस पुस्तक की तुम बात करती हो वह तो भाषा में है। बिरजन उत्तर देती है, 'तो मैं भी भाषा ही पढ़ूँगी। इसमें कैसी अच्छी-अच्छी कहानियाँ हैं। मेरी किताब में तो एक कहानी भी नहीं है।' प्रेमचन्द कैसे सरलता से हिन्दी का प्रचार कर रहे हैं। पाठक ध्यान दें।

मुंशी प्रेमचन्द जी ने उर्दू में 'आपका चित्र' नामक एक कहानी तीन अध्यायों में लिखी थी जो लाहौर के उर्दू पत्र 'प्रकाश' में सन् १९२९ में प्रकाशित हुई थी। इस कहानी के पहले भाग में उन्होंने आर्यसमाज के लोगों द्वारा महर्षि दयानन्द का अपने घरों में चित्र लगाये जाने को मूर्तिपूजा से भिन्न होने या न होने पर बहुत ही मार्मिक शब्दों में प्रकाश डाला है। मूर्तिपूजा व चित्रपूजा का ऐसा सशक्त भावपूर्ण चित्रण इससे पूर्व कहीं पढ़ने को नहीं मिलता। यह उनके आर्यसमाजी होने का सबसे बड़ा प्रमाण माना जा सकता है। वह लिखते हैं- 'लोग मुझ से कहते हैं तुम भी मूर्ति-पूजक हो। तुम ने भी तो स्वामी दयानन्द का चित्र अपने कमरे में लटका रखा है।

माना कि तुम उसे जल नहीं चढ़ाते हो। इसको भोग नहीं लगाते। घण्टा नहीं बजाते। उसे स्नान नहीं कराते। उसका शृंगार नहीं करते। उसका स्वांग नहीं बनाते। उसको नमन तो करते ही हो। उसकी ऋषि दयानन्द की विचारधारा को तो सिर झुकाते हो, मानते ही हो। कभी-कभी माला व फलों से भी उसका सम्मान करते हो। यह पूजा नहीं तो और क्या है?'

इन सभी प्रश्नों का उत्तर देते हुए मुंशी प्रेमचन्द जी लिखते हैं- 'उत्तर देता हूँ कि श्रीमान् इस आदर व पूजा में अन्तर है। बहुत बड़ा अन्तर है। मैं उसे अपने कक्ष में इसलिए नहीं लटकाये हुए हूँ कि उसके दर्शन से मुझे मोक्ष की प्राप्ति होगी। मैं आवागमन के चक्कर से छूट जाऊँगा, उसके दर्शन मात्र से मेरे सारे पाप धुल जायेंगे अथवा मैं उसे प्रसन्न करके अपना अभियोग (case) जीत जाऊँगा अथवा शत्रु पर

जिस क्षण देह में दुर्बलता प्रतीत हो, उसी क्षण एक महान् विशालकाय संन्यासी का स्मरण करो। जिस क्षण तुम्हारे मन में शिथिलता या कायरता का प्रवेश हो, उसी क्षण जीवन और उत्साह से ओतप्रोत उस देशभक्त का स्मरण करो। जिस क्षण तुम्हारे हृदय में मोह और विलास का साम्राज्य प्रवर्तित हो, उसी क्षण धन को ठोकर मारने वाले उस नैष्ठिक ब्रह्मचारी की ओर दृष्टिपात करो। अपमान से आहत होकर जिस क्षण तुम नजर ऊँची न उठा सको, उसी क्षण हिमालय के समान अडिग और उन्नत व्यक्ति के ओजस्वी मुख को अपनी कल्पना में उपस्थित करो। मृत्यु वरण करते हुए डर लगे तो इस निर्भयता की मूर्ति का ध्यान करो। द्वेष भाव से उत्तप्त होकर जब तुम्हें अपने विरोधी को क्षमा करने में हिचकिचाहट हो, तो रागद्वेषविमुक्त संन्यासी को याद करो। यह गौरवशाली पुरुष भारतीय महापुरुषों में अग्र स्थान पर विराजमान स्वामी दयानन्द है।

–रमणलाल वसन्तलाल देसाई

विजय प्राप्त कर लूँगा किंवा और किसी ढंग से मेरा धार्मिक अथवा सांसारिक प्रयोजन सिद्ध हो सकेगा। मैं उसे केवल इस कारण से अपने कमरे में लटकाये हुए हूँ कि स्वामी जी के जीवन का उच्च व पवित्र आचरण सदा मेरे नयनों के सम्मुख रहे। जिस घड़ी सांसारिक लोगों के व्यवहार से मेरा मन ऊब जाये, जिस समय प्रलोभनों के कारण पग डगमगाये अथवा प्रतिशोध की भावना मेरे मन में लहरें लेने लगे अथवा जीवन की कठिन राहें मेरे साहस व शौर्य की अग्नि को मन्द करने लगे, उस विकट वेला में उस पवित्र मोहिनी मूर्त के दर्शनों से आकुल-व्याकुल हृदय को शान्ति हो। दृढ़ता, धीरज बने रहें। क्षमा व सहनशीलता के मार्ग पर पग चलते चलें तथा मैं अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि इस चित्र से मुझे लाभ पहुँचा है और एक बार नहीं कई बार।'

कहानी के दूसरे भाग में एक राजा का वर्णन किया गया है जो अपने एक विश्वसनीय सेवक को अपनी पसन्दीदा महिला के प्रेमी की हत्या का कार्य सौंपता है और उस कार्य को करने के बदले में अकूत सम्पत्ति देने का वायदा करता है। युवक प्रलोभनवश तैयार हो जाता है परन्तु घर जाकर दीवार पर स्वामी दयानन्द का चित्र देखकर अपने निर्णय को महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के विपरीत जानकर पश्चाताप करता है और, परिणाम की चिन्ता न कर, साहस करके राजा साहब के पास जाकर अपनी असमर्थता व्यक्त करता है। इस पर उसे अनेक कटु बातें सुनने को मिलती हैं। राजा साहेब होंठो को दाँतों से काटकर बोले, 'बहुत अच्छा जाओ और आज ही रात को मेरे राज्य की सीमा से बाहर निकल जाओ। सम्भव है कल तुम्हें यह अवसर न मिले।' उसी लहर में उन्होंने उस पूर्व विश्वसनीय युवक को नमक हराम, टेढ़ी बुद्धि वाला, अधम और जाने क्या-क्या कहा। प्रणाम कर वह युवक चला जाता है। उसी रात्रि को अकेले ही कुछ वस्त्र और कुछ रुपये एक सन्दूक में रखकर घर से निकल पड़ा। हाँ! स्वामी जी का चित्र उसके सीने से लगा हुआ था। इस कहानी में मुंशी प्रेमचन्द जी ने स्वामी दयानन्द व उनके चित्र के प्रति अपने मनोभावों को प्रस्तुत किया है।

"'कायाकल्प' में हिन्दुओं और मुसलमानों के मध्य हुए संवाद का सन्देश सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में दिए गए सन्देश से मिलता है।"

अनुज आर्य (साभार -सोशल मीडिया)

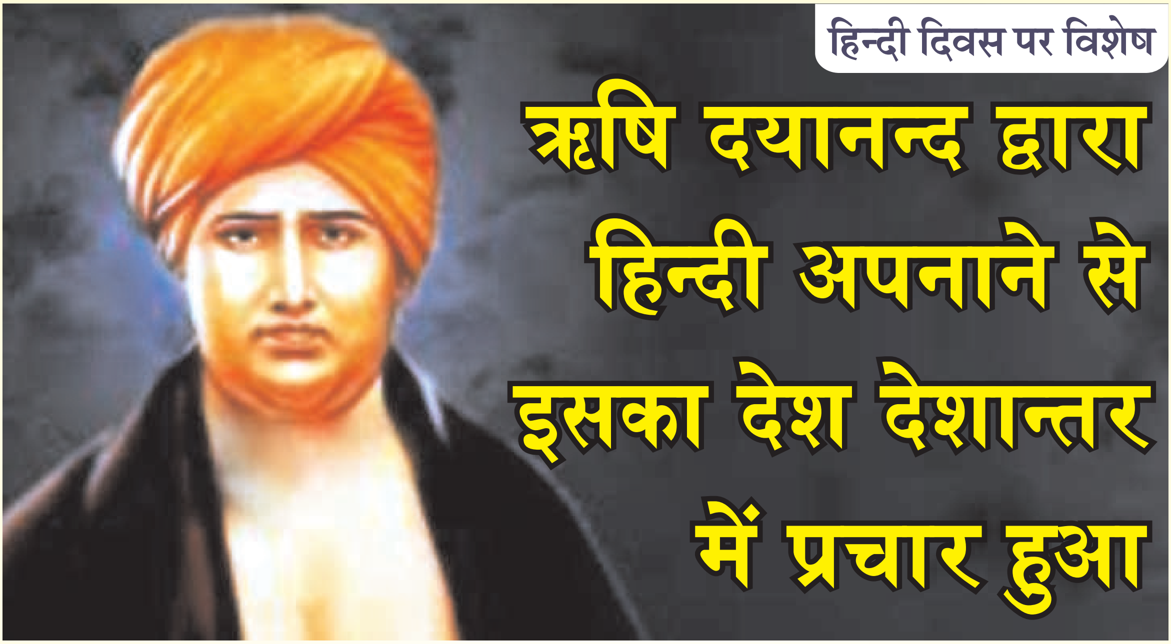

हिन्दी दिवस पर विशेष

ऋषि दयानन्द द्वारा हिन्दी अपनाने से इसका देश देशान्तर में प्रचार हुआ

आज हम जिस हिन्दी भाषा का प्रयोग करते हैं उसका उद्‍भव एवं विकास विगत लगभग दो सौ वर्षों में उत्तरोत्तर हुआ दृष्टिगोचर होता है। ऋषि दयानन्द (१८२५-१८८३) के काल में हिन्दी की उन्नति हो रही थी। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी को हिन्दी की उन्नति करने वाले पुरुषों में प्रमुख स्थान प्राप्त है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ऋषि दयानन्द के समकालीन थे। वह अल्पायु में ही मृत्यु को प्राप्त हो गये। उनके बाद हिन्दी को साहित्यिक रूप देने व उसे समृद्ध करने के लिये अनेक कवियों, लेखकों व नाटक आदि की रचना करने वाले हिन्दी के विद्वानों का जन्म हुआ। ऋषि दयानन्द ने भारतेन्दु जी के बाल्यकाल में ही अपना हिन्दी भाषा का 'सत्यार्थप्रकाश' ग्रन्थ लिखकर प्रचारित किया था जिसका प्रचार देश के अनेक भागों में हुआ और इसी ग्रन्थ के कारण लोगों को हिन्दू समाज के अन्धविश्वासों व कुरीतियों का दिग्दर्शन हुआ था। विलुप्त वैदिक धर्म एवं संस्कृति का अनावरण भी ऋषि दयानन्द के उपदेशों एवं उनके सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि अनेक ग्रन्थों से हुआ था।

ऋषि दयानन्द के समय में धर्माचार्यों को विद्या व अविद्या का भेद विदित नहीं था। सभी अपनी अविद्या को विद्या व ज्ञान मानकर अभिमान करते थे और अपने मत को उत्तम और दूसरे मतों को हेय मानते थे। ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन में सत्य एवं असत्य सिद्धान्तों की खोज की थी और असत्य मान्यताओं व सिद्धान्तों की समीक्षा कर उनका तर्क एवं युक्तियों से खण्डन कर उनका प्रचार किया। उनका मानना था कि सत्य ही मनुष्य व मनुष्य जाति की उन्नति का कारण व आधार होता है। बिना सत्य के ग्रहण किये और असत्य का त्याग किये मनुष्य जाति की उन्नति नहीं हो सकती। यह सत्य सिद्धान्त इस सृष्टि में अनादि काल से प्रवृत्त है और अनन्त काल तक रहेगा। आश्चर्य है कि इस सिद्धान्त का विज्ञान में तो उपयोग किया जाता है, सैद्धान्तिक रूप में भी किया जाता है, परन्तु मत-मतान्तर अपने-अपने व्यवहारों में इसका पूर्णतः पालन नहीं करते। एक मत दूसरे मत को प्रायः हेय मानता तथा स्वमत का ही बिना सत्यासत्य का विचार किये पोषण करता है। इसी कारण से संसार में अनेक मत-मतान्तर हैं जो देश व समाज की उन्नति में साधक कम तथा बाधक अधिक हैं। देश, समाज तथा व्यक्ति-व्यक्ति की उन्नति के लिए सत्य की प्रतिष्ठा एवं असत्य का त्याग किया जाना आवश्यक है। इसी सिद्धान्त को ऋषि दयानन्द ने देश व समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर प्रचार किया था और इसके लिये उन दिनों सबसे अधिक जानी व समझी जाने वाली भाषा, जिसे वह आर्यभाषा कहते थे, जो वस्तुतः वर्तमान में हिन्दी के नाम से जानी जाने वाली भाषा है, प्रयोग में लाकर देश-देशान्तर में प्रचार कर इसकी उन्नति में योगदान किया था। आज हिन्दी का जो उन्नत व प्रभावशाली स्वरूप तथा इसका सर्वत्र प्रचार व स्वीकारोक्ति हम देखते हैं, उसमें सर्वाधिक योगदान यदि किसी व्यक्ति व संस्था का है तो वह ऋषि दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज का है।

सत्यार्थप्रकाश ऋषि दयानन्द जी की आर्य हिन्दी भाषा में रची गयी अमर रचना है। इससे पूर्व किसी मत, पन्थ व सम्प्रदाय

ने अपने ग्रन्थों की रचना हिन्दी में नहीं की। ऋषि दयानन्द को अपने कलकत्ता प्रवास में ब्रह्मसमाज के नेता श्री केशवचन्द्र सेन जी से हिन्दी को अपनाने का सुझाव मिला था। इसका कारण था कि ऋषि दयानन्द इससे पूर्व संस्कृत में ही व्याख्यान देते व बोलचाल में भी संस्कृत का ही प्रयोग करते थे। उनकी संस्कृत भाषा को सामान्य जन समझ नहीं पाते थे जिससे धर्म प्रचार में एक अवरोध की स्थिति थी। ऋषि दयानन्द को अपने विचारों के अनुवाद के लिये दुभाषियों की सेवायें लेनी पड़ती थी जो ऋषि दयानन्द का पूरा आशय जनता को बताने में असमर्थ रहते थे और कुछ चालाक व विरोधी विचारों के लोग उनके आशय के विरुद्ध भी लोगों को बताया करते थे। इस दृष्टि से धर्म प्रचार को प्रभावशाली बनाने के लिये देश की जन-जन की भाषा को अपनाना आवश्यक था। ऋषि दयानन्द ने हिन्दी के महत्व को समझ कर श्री केशवचन्द्र सेन जी के प्रस्ताव को तत्काल ही स्वीकार कर लिया था और तभी से उन्होंने हिन्दी भाषा में व्याख्यान देना आरम्भ कर दिया जिसमें समय के साथ सुधार होता गया। इसी कारण उन्होंने सन् १८७४ में अपने प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की रचना भी हिन्दी भाषा में की थी। इसके ६ वर्ष बाद जब उनकी हिन्दी काफी परिमार्जित व परिष्कृत हो गई थी, तो उन्होंने इस ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का नवीन संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण भी निकाला था। यह दोनों ही संस्करण अत्यन्त उपयोगी हैं जिसे पढ़कर न केवल पाठक हिन्दी का जानकार वा विद्वान् बन जाता है अपितु उसके भाषा विषयक ज्ञान में भी सुधार होता है जिससे वह संस्कृतनिष्ठ हिन्दी शब्दों का प्रयोग कर हिन्दी का परिमार्जित एवं शुद्ध रूप में व्यवहार कर इसके प्रचार व प्रसार में सहयोग करता है। सत्यार्थप्रकाश को इस बात का भी गौरव है कि विश्व का बहुचर्चित एवं वैदिक धर्मी अनुयायियों का वेदों के बाद सुप्रतिष्ठित धर्मग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' लोक भाषा हिन्दी में है। सत्यार्थप्रकाश से वेद, उपनिषद्, दर्शन तथा मनुस्मृति के अनेक मन्त्रों, श्लोकों व संस्कृत वचनों के हिन्दी अर्थ पहली बार प्रकाश में आये। इससे लोगों में वेद, उपनिषद्, दर्शन, मनुस्मृति, रामायण एवं महाभारत आदि ग्रन्थों के अध्ययन की प्रवृत्ति उत्पन्न हुई थी। वैदिक आर्य विद्वानों ने इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये इन सभी शास्त्रीय व इतिहास के ग्रन्थों के श्लोकों के हिन्दी अर्थों के साथ संस्करण निकाले जिससे हिन्दी का देश भर में प्रचार हुआ। यदि ऋषि दयानन्द न आये होते और उन्होंने सत्यार्थप्रकाश को हिन्दी में न लिखा होता व हिन्दी को अपनाने का आन्दोलन न चलाया होता, तो आज हम हिन्दी की जिस सन्तोषजनक अवस्था को देख रहे हैं, वह कदापि न होती। हिन्दी का प्रचार-प्रसार तथा प्रभाव बढ़ाने में यदि किसी संस्था व मत ने सर्वाधिक योगदान दिया है तो वह देश का आर्यसमाज संगठन ही है।

हिन्दी के प्रचार प्रसार में आर्यसमाज द्वारा अपनी स्थापना वर्ष १८७५ से ही देश के अनेक भागों में निकाली गई पत्र-पत्रिकाओं का भी योगदान है। पंजाब में उर्दू का अत्यधिक प्रभाव था। हिन्दी पाठक नगण्य होते थे। ऐसे समय में भी आर्यसमाज के प्रमुख नेता व विद्वान् स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने उर्दू पत्र 'सद्धर्म प्रचारक' पत्र को हिन्दी में प्रकाशित कर एक बड़ा निर्णय लिया था जिससे पंजाब में हिन्दी प्रचार में प्रशंसनीय लाभ हुआ। लाहौर से श्री खुशहालचन्द खुर्सन्द जी का उर्दू 'मिलाप' निकलता था। हिन्दी समाचार पत्र की वहाँ कोई सम्भावना नहीं थी। ऐसी स्थिति में भी श्री खुशहालचन्द खुर्सन्द, जो बाद में महात्मा आनन्द स्वामी जी के नाम से प्रसिद्ध हुए, के सुपुत्र महाशय यश जी ने लाहौर से दैनिक हिन्दी मिलाप पत्र का प्रकाशन कर हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महनीय योगदान किया। इसी प्रकार आर्यसमाज के अनेक विद्वानों ने देश के अनेक भागों में ऋषि दयानन्द के हिन्दी प्रेम व आग्रह को सामने रखकर हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया जिससे हिन्दी का देश भर में प्रचार हुआ। आर्यसमाज के सभी विद्वान् देश भर में प्रचार के लिये जाते थे। दक्षिण भारत के कुछ भागों में भी आर्यसमाज के विद्वानों ने प्रचार किया। सभी विद्वान् हिन्दी भाषा में ही प्रचार करते व व्याख्यान देते थे। आर्यसमाज का प्रायः समस्त साहित्य हिन्दी भाषा में ही है। इस कारण भी देश में हिन्दी का प्रचार प्रसार हुआ। आर्यसमाज ने देश को अनेक हिन्दी सेवी विद्वान्, लेखक, कवि, वेदभाष्यकार, अनुवादक व सम्पादक आदि दिये। इन सबने हिन्दी के प्रचार प्रसार में योगदान किया है।

सन् १८८२ में ब्रिटिश सरकार ने डॉ. हण्टर की अध्यक्षता में एक कमीशन की स्थापना कर उससे राजकार्यों के लिए उपयुक्त भाषा की सिफारिश करने को कहा था। यह आयोग

हण्टर कमीशन के नाम से जाना गया। यद्यपि उन दिनों सरकारी कामकाज में उर्दू-फारसी एवं अंग्रेजी भाषाओं का प्रयोग ही होता था, परन्तु स्वामी दयानन्द जी के सन् १८७२ से १८८२ तक व्याख्यानों, ग्रन्थ-लेखन, शास्त्रार्थों आदि के प्रचार एवं इसके अनुयायियों की हिन्दी सेवा व निष्ठा से हिन्दी भाषा भी सर्वत्र लोकप्रिय हो गई थी। इस हण्टर कमीशन के माध्यम से हिन्दी को राजभाषा का स्थान दिलाने के लिये स्वामी दयानन्द जी ने देश की सभी आर्यसमाजों को पत्र लिखकर बड़ी संख्या में हस्ताक्षरयुक्त ज्ञापन हण्टर कमीशन को भेजने की प्रेरणा की और जहाँ से ज्ञापन नहीं भेजे गये थे, उन्हें स्मरण-पत्र भेजकर शीघ्र ज्ञापन भेजने के लिए सचेत किया। आर्यसमाज फर्रुखाबाद के स्तम्भ बाबू दुर्गादास को भेजे पत्र में स्वामी जी ने लिखा था- 'यह काम एक के करने का नहीं है और अवसर चूके वह अवसर आना दुर्लभ है। जो यह कार्य सिद्ध हुआ (हो गया अर्थात् हिन्दी राजभाषा बना दी गई) तो आशा है कि मुख्य सुधार की नींव पड़ जायेगी।' स्वामी जी की प्रेरणा के परिणामस्वरूप देश के कोने-कोने से आयोग को आर्यसमाजों ने बड़ी संख्या में लोगों के हस्ताक्षर कराकर ज्ञापन भेजे। कानपुर से हण्टर कमीशन को दो सौ मैमोरियल भेजे गए, जिन पर दो लाख लोगों ने हिन्दी को राजभाषा बनाने के पक्ष में हस्ताक्षर किए थे। हिन्दी को गौरव प्रदान करने के लिए स्वामी दयानन्द जी द्वारा किया गया यह कार्य इतिहास की एक अन्यतम घटना है। स्वामी दयानन्द जी की प्रेरणा से जिन प्रमुख लोगों ने हिन्दी भाषा सीखी उनमें जहाँ अनेक रियासतों के राज-परिवार के सदस्य हैं, वहीं कर्नल एच.ओ. अल्काट भी हैं जो अमेरिका में स्वामी जी की प्रशंसा सुनकर उनके दर्शन करने भारत आये थे और भारत में स्वामी दयानन्द जी ने उनका आतिथ्य किया था। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि शाहपुरा, उदयपुर, जोधपुर आदि अनेक स्वतन्त्र रियासतों के

महाराज स्वामी दयानन्द जी के अनुयायी थे और स्वामी जी की प्रेरणा से ही उन्होंने अपनी-अपनी रियासतों में हिन्दी को राजभाषा का स्थान दिया था।

स्वामी दयानन्द जी संस्कृत व हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं का भी आदर करते थे। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश में लिखा है- 'जब पुत्र-पुत्रियों की आयु पाँच वर्ष हो जाये तो उन्हें देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करायें, अन्य देशीय भाषाओं के अक्षरों का भी।' स्वामी जी अन्य प्रादेशिक भाषाओं को हिन्दी व संस्कृत की भाँति देवनागरी लिपि में लिखे जाने के समर्थक थे जो राष्ट्रीय एकता की पूरक होती। अपने जीवन काल में हिन्दी पत्रकारिता को भी आपने नई दिशा दी। आर्य दर्पण, आर्य प्रकाश आदि अनेक हिन्दी पत्र आपकी प्रेरणा से प्रकाशित हुए एवं इनकी संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई।

स्वामी दयानन्द जी ने अपने समकालीन लोगों से हिन्दी में जो पत्र-व्यवहार किया है, वह भी समकालीन किसी एक व्यक्ति द्वारा किए गए पत्र-व्यवहार में सर्वाधिक है। स्वामी दयानन्द जी पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने अपनी आत्मकथा हिन्दी में लिखकर भावी आत्मकथा लेखकों का मार्ग प्रशस्त किया। सृष्टि के आरम्भ में वेदों की उत्पत्ति से स्वामी दयानन्द जी के समय तक वेदों का संस्कृत भाषा में ही भाष्य होता था। स्वामी दयानन्द जी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने वेदों का हिन्दी भाषा में भाष्य कर आम लोगों का धर्मशास्त्रों में प्रवेश कराया। स्वामी दयानन्द जी सहित आर्यसमाज एवं उनके अनुयायियों द्वारा स्थापित गुरुकुल एवं डी.ए.वी. स्कूल एवं कॉलेजों द्वारा भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय कार्य किया गया है। गुरुकुल कांगड़ी में देश में सर्वप्रथम विज्ञान व गणित सहित सभी विषयों की पुस्तकें हिन्दी माध्यम से तैयार कर उनका सफलतापूर्वक अध्यापन किया गया। मुस्लिम मत की धर्मपुस्तक कुरआन का हिन्दी में अनुवाद कराने का श्रेय भी स्वामी दयानन्द जी को है। इसी के आधार पर उन्होंने इस मत की मान्यताओं की परीक्षा की व उसे अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में प्रस्तुत किया है।

अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में स्वामी दयानन्द जी ने लिखा है कि जो मनुष्य जिस देशभाषा को पढ़ता है उसको उसी भाषा का संस्कार होता है। अंग्रेजी व अन्य देशीय भाषाओं का पढ़ा हुआ व्यक्ति आचार व विचारों की दृष्टि से प्राचीन भारतीय वैदिक संस्कृति से सर्वथा दूर देखा जाता है। अतः स्वामी जी का यह निष्कर्ष उचित ही है। संस्कृत व हिन्दी के अध्ययन, अध्यापन व व्यवहार से ही

सनातन वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा सम्भव है।

थियोसोफिकल सोसायटी की नेत्री मैडम ब्लेवेटेस्की ने स्वामी दयानन्द जी से उनके ग्रन्थों के अंग्रेजी अनुवाद की अनुमति मांगी थी। तब स्वामी दयानन्द जी ने उन्हें ३१ जुलाई, १८७६ को विस्तृत पत्र लिखकर अनुवाद की अनुमति देने से हिन्दी के प्रचार व प्रसार एवं हिन्दी की प्रगति में आने वाली बाधाओं से परिचित कराया था। स्वामी दयानन्द जी ने उन्हें लिखा था कि अंग्रेजी अनुवाद सुलभ होने पर देश-विदेश में जो लोग उनके ग्रन्थों को समझने के लिए संस्कृत व हिन्दी का अध्ययन कर रहे हैं, वह समाप्त हो जायेगा।

हरिद्वार में एक बार व्याख्यान देते समय एक श्रोता द्वारा स्वामी दयानन्द जी से उनकी पुस्तकों का उर्दू में अनुवाद कराने की प्रार्थना करने पर श्रोताओं को सम्बोधित कर उन्होंने कहा था- 'आप तो मुझे अनुवाद की सम्मति देते हैं, परन्तु दयानन्द के नेत्र वह दिन देखना चाहते हैं कि जब कश्मीर से कन्याकुमारी और अटक से कटक तक देवनागरी अक्षरों का प्रचार होगा।' स्वामी जी ने एक स्थान पर यह भी कहा है कि जो व्यक्ति इस देश का अन्न खाता, यहाँ निवास करता है और जो इस देश की वायु का सेवन व जल का ग्रहण करता है, यदि वह इस देश की संस्कृत व हिन्दी भाषा को नहीं सीखता, तो उससे क्या आशा की जा सकती है? सभी व्यक्तियों को इन भावों पर विचार करना चाहिये।

स्वामी दयानन्द तथा उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने आर्यभाषा हिन्दी की अनन्य प्रशंसनीय सेवा की है। हिन्दी को अध्यात्म सहित राजकार्य, आधुनिक साहित्य एवं संप्रेषण की भाषा बनाने में आर्यसमाज का सर्वोपरि योगदान है। एक षड्यन्त्र के अन्तर्गत स्वामीजी को विष देकर व उनके उपचार में असावधानी होने से ५८-५९ वर्ष की अवस्था में उनका देहावसान हो गया था। यदि वह कुछ अधिक समय तक जीवित रहते तो अपने व्याख्यानों, शास्त्रार्थों तथा ग्रन्थों के द्वारा हिन्दी को न केवल समृद्ध करते अपितु देश देशान्तर में हिन्दी का अधिकाधिक प्रचार भी करते। १४ सितम्बर, २०२० को हिन्दी दिवस को ध्यान में रखकर हमने इस लेख में ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के हिन्दी के प्रचार व प्रसार में योगदान की चर्चा की है। आशा है पाठक इससे लाभान्वित होंगे।

-मनमोहन कुमार आर्य
196 चूक्खूवाला-2, देहरादून- 248001 (उत्तराखण्ड)

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०४/२०

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (नवम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१ अ	१	१ न्त	१	१ ख		२	२	२ य	
३	३ र		४	४ घ	४		५ रा	५	
६	६ द्धा	६	६ स्था		७	७ भि	७	७	७ श

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. अनन्त आनन्द को भोगने का असीम सामर्थ्य, कर्म और साधन जीवों में नहीं इसलिए क्या नहीं भोग सकते?

२. समाधि संस्कारजन्य युक्त शुद्ध शरीर जिसका पराक्रम मुक्ति में भी यथावत् सहायक रहता है, उस शरीर को क्या कहते हैं?

३. अनुबन्धों की संख्या कितनी है?

४. मुमुक्षु को न्यून से न्यून प्रतिदिन कितनी देर ध्यान करना चाहिए?

५. पंच क्लेशों में 'सुख में प्रीति होना' क्या कहलाता है?

६. जहाँ रोग है वहाँ कौनसी अवस्था निश्चित होती है?

७. मृत्यु दुःख से त्रास क्या कहलाता है?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०२/२० का सही उत्तर

१. अन्नमय २. अपान ३. तीन ४. सूक्ष्म शरीर
५. हाँ ६. अभौतिक ७. होता है

''विस्तृत नियम पृष्ठ १४ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अक्टूबर २०२०

वीरता की प्रतिमूर्ति हेलेना दत्त

कथा सरित

जब-जब देश पर संकट के बादल दिखाई दिए तब-तब इस देश की वीर महिलाओं ने पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर बलिदानी मार्ग पर चलते हुए उन्हें सहयोग दिया। हमारी इस कथा की कथानायिका हेलेना दत्त जी भी इस प्रकार की नारियों में से एक थीं।

पूर्वी बंगाल जिसे आजकल हम बंगला देश के नाम से जानते हैं, इसके ढाका क्षेत्र के गाँव कालीगंज में एक सामान्य बंगाली परिवार में सन् १९१६ ईस्वी में हमारी इस कथानायिका वीर बाला हेलेना का जन्म हुआ। सन् १९२६ ईस्वी में जब वह ढाका के हाई स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रही थी और उसकी आयु केवल दस वर्ष की ही थी, उस बालिका का सम्पर्क एक क्रान्तिकारी महिला लीला नाग से हुआ। उनके इस सम्पर्क से हेलेना के लिए देश की स्वाधीनता का मार्ग जो अब तक बन्द पड़ा था, खुल गया क्योंकि लीला नाग के सम्पर्क में आने के पश्चात् उन दोनों का समय-समय पर मिलना आरम्भ हो गया। मिलने के इन अवसरों पर इनमें जो बातचीत होती, उस बातचीत के माध्यम से हेलेना दत्त को न केवल क्रान्तिकारी गतिविधियों का ही ज्ञान होने लगा अपितु अब वह देश की आजादी के लिए होने वाली छोटी-छोटी गतिविधियों में भी भाग लेने लगीं। इन गतिविधियों के कारण हेलेना की निष्ठा क्रान्तिकारी गतिविधियों तथा देश की स्वाधीनता के लिए प्रतिदिन बढ़ने लगी।

हेलेना मात्र दो वर्ष में ही अर्थात् सन् १९२८ ईस्वी में विधिवत् रूप से 'दिपाली संघ' की सदस्य बन गई। अब हेलेना को स्वाधीनता सेनानी के रूप में तैयार किया जाने लगा तथा इस निमित्त वह शस्त्रास्त्र चलाना भी सीखने लगी। सन् १९३० ईस्वी में जो आन्दोलन हुआ, इसमें दिपाली संघ तथा श्री संघ के सदस्यों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। वास्तव में सन् १९३० ईस्वी के आन्दोलन का आधार ही यह दोनों संगठन थे। इस प्रकार मात्र चौदह वर्ष की अवस्था में हेलना दत्त गुप्त रूप से पूर्ण समर्पण की भावना अपने अन्दर संजोये हुए इस आन्दोलन के सदस्यों के साथ जुड़ कर देश की स्वाधीनता का यह पुनीत कार्य करने लगी।

यह वह काल था जब देश की विदेशी सरकार क्रान्तिकारियों पर सदा ही कोप दृष्टि बनाए रखती थी, अतः क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लेने वाले अंग्रेज की आँखों से बच पावें, यह तो सम्भव ही न था। परिणामस्वरूप हेलेना दत्त भी शीघ्र ही सरकार की आँखों के लिए कंकर का काम करने लगी। हेलेना दत्त को दिनांक १२ फरवरी सन् १९३३ ईस्वी को सरकार ने भयंकर अपराधी मानते हुए बन्दी बना लिया। उसके निवास स्थान की छानबीन भी की गई तो यहाँ से एक तमंचा भी बरामद किया गया। इस समय उसकी आयु मात्र सोलह वर्ष की ही थी। अतः अल्पायु का लाभ देते हुए उन्हें मात्र पाँच वर्ष की जेल की सजा सुनाई गई।

हेलेना दत्त पाँच वर्ष की जेल काटकर सन् १९३७ ईस्वी में जेल से बाहर आई। जेल से छूटने के पश्चात् दो वर्ष तक उसने शिक्षा प्राप्ति का कार्य किया। अब तक यह वीरांगणा केवल हेलेना के नाम से ही जानी जाती थी किन्तु इन्हीं दिनों उसका विवाह वीर क्रान्तिकारी सुकुमार दत्त से हो गया और अब वह हेलेना दत्त बन गई और भविष्य में इस नाम से ही सुप्रसिद्ध हुई। उसके पति सुकुमार दत्त फारवर्ड ब्लाक के अग्रणी सदस्य थे अतः हेलेना भी कुछ ही दिनों में फारवर्ड ब्लाक में सम्मिलित होकर अपने पति के क्रान्तिकारी कार्यों में हाथ बंटाने लगी।

जब भारत छोड़ो आन्दोलन को आरम्भ करने का नाद निनादित हुआ तो हेलेना दत्त का हृदय एक बार फिर से फड़कने लगा। देश के लिए कुछ करने की उमंगें उसके अन्दर फिर से उठने लगीं। इस अवस्था में वह सक्रिय होकर देश हित के कार्यों में लग गई। अंग्रेज तो उसे पहले से ही जानते थे और इस कारण उस पर अपनी कोप दृष्टि बना ही रखी थी। सन् १९४३ ईस्वी में हेलेना दत्त को अंग्रेज सरकार ने एक बार फिर से बन्दी बनाकर दो वर्ष के लिए कारावास में भेज दिया। जेल की इस सजा से वह सन् १९४५ ईस्वी को मुक्त हुई। इसके कुछ समय के पश्चात् ही अर्थात् दिनांक १५ अगस्त सन् १९४७

ईस्वी को भारत स्वाधीन हो गया।

जो हेलेना दत्त अब तक देश की स्वाधीनता के लिये अंग्रेजों से जूझ रही थी, वह अब देश के स्वाधीन होने के कारण इसके नवनिर्माण के कार्यों में व्यस्त हो गई। वह भली प्रकार से जानती थी कि इस देश को दो सौ वर्ष तक फिरंगियों ने निरन्तर लूटा है। यह ठीक है कि आज देश स्वाधीन हो चुका है किन्तु अब भी देश के नवयुवकों में देश के लिए भावना तैयार करने की आवश्यकता को वह अनुभव कर रही थी, उनको तप तथा त्याग के उपदेश देने की आवश्यकता को उसने अनुभव किया। देश के नवनिर्माण के लिये यह सब आवश्यक भी था, अतः देश की एकनिष्ठ सेवक बनते हुए हेलेना दत्त ने स्वयं को इस कार्य के लिए समर्पित कर दिया। यदि वह चाहती तो इस प्रकार के त्यागपूर्ण कार्य करने के स्थान पर, उसने विगत में देश के लिए जो कार्य किया था, उसका पूरा-पूरा मूल्य इस देश से वसूल कर लेती किन्तु हेलेना में सत्ता सुख की तो कभी कोई लालसा थी ही नहीं! उसने सब प्रकार के प्रलोभनों से दूर ही रहना पसन्द किया। सामाजिक उत्थान और देश का नवनिर्माण, आज यह एकमात्र उसका लक्ष्य था। अतः इस लक्ष्य को पाने के लिये उसने स्वयं को समर्पित कर दिया।

उसने प्रजा सोशलिस्ट दल की सदस्यता ले ली तथा इस दल की सक्रिय सदस्या बनकर देश के उत्थान के कार्यों में लग गई। इस प्रकार अपने जीवन के अन्त तक इस दल के माध्यम से ही देश के लिए कार्य करती रहीं।

– डॉ. अशोक आर्य
पॉकेट 1/61, रामप्रस्थ ग्रीन से.-७
वैशाली- 201012 गाजियाबाद (उ. प्र.)

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य (मंत्री-न्यास) भंवरलाल गर्ग (कार्यालय मंत्री) डॉ.अमृत लाल तापड़िया (उपमंत्री-न्यास)

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश

रु.100 के स्थान पर अब रु.45 में उपलब्ध

सौ प्रतियाँ लेने पर रु.4000

(डाक खर्च अतिरिक्त)

रु.15000 सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग राशि देकर एक हजार प्रतियों पर अपना वा अपने किन्हीं परिचित का विवरण फोटो सहित छपवावें।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०२/२० के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०२/२० के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री इद्रजीत् देव; यमुनानगर (हरि.), डॉ. राजबाला आर्या; करनाल (हरि.), प्रधान आर्य समाज; बीकानेर (राज.), श्रीमती रूपा देवी; बीकानेर (राज.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी; बीकानेर (राज.), श्रीमती सुनीता सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती कंचन सोनी; बीकानेर (राज.), श्री यज्ञसेन चौहान; विजयनगर (अजमेर), श्रीमती किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री हर्षवर्धन आर्य; नेमदारगंज (बिहार), श्रीमती सुप्रिया चावला; जालन्धर (पंजाब)।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य– पहेली के नियम पृष्ठ १४ पर अवश्य पढ़ें।

समाचार

मंत्रोच्चार के साथ किया वृक्षारोपण

वृक्ष पृथ्वी के श्रृंगार हैं इसलिए अधिक से अधिक संख्या में वृक्ष

लगाकर इस धरती को हरा-भरा बनाएँ और सजाएँ, उक्त विचार आर्य समाज के प्रान्तीय प्रचार प्रभारी अर्जुन देव चड्ढा ने विज्ञान नगर स्थित अशोक पार्क में अशोक वृक्ष का पौधा लगाते हुए व्यक्त किए।

आज विज्ञान नगर की अशोक ब्लॉक समिति द्वारा आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि नगर निगम, कोटा दक्षिण की कमिश्नर श्रीमती कीर्ति राठौर ने स्थानीय निवासियों के साथ वृक्षारोपण किया।

वरिष्ठ सदस्य व पूर्व महामंत्री अर्जुन देव चड्ढा के साथ कीर्ति राठौर व कोटा नागरिक सहकारी बैंक के चेयरमैन राजेश कृष्ण बिरला ने समिति के अध्यक्ष कुंज बिहारी खण्डेलवाल के साथ मंत्रोच्चार पूर्वक वृक्षारोपण किया।

समिति के सदस्यों ने इस अवसर पर अशोक पार्क में ५० से अधिक छायादार पौधों का वृक्षारोपण किया।

स्वतन्त्रता दिवस पर संगीत गोष्ठी सम्पन्न

रविवार,१६ अगस्त २०२०, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से ७४वें स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में ऑनलाइन संगीत गोष्ठी का आयोजन करके स्वतन्त्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। यह

कोरोना काल में ७४वाँ वेबिनार था।

भजनोपदेशक आचार्य भानुप्रकाश शास्त्री ने भारत माँ वीरों वाली है... गीत के माध्यम से सन्देश दिया कि भारत देश ने शहीद भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु, पं रामप्रसाद बिस्मिल, ऊधम सिंह जैसे अनेक वीरों को जन्म दिया। जिन्होंने अपने जीवन का सर्वस्व भारत माता की आजादी में समर्पित कर दिया।

मुख्य अतिथि सीए हंसराज चुघ ने कहा कि आज ७४वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हम सभी को प्रण लेना चाहिए कि हम समय पर अपने बिल व टैक्स को जमा करें तभी भारत देश आर्थिक रूप से समृद्ध बन सकता है। देश की आजादी में लाखों देशभक्तों ने अपना जीवन समर्पित कर दिया तब जाकर आजादी मिली।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि 'लड़े जंग वीरों की तरह, जब खून खौल फौलाद हुआ, मरते दम तक डटे रहे वो, तब ही तो देश आजाद हुआ।' उन्होंने कहा कि आज स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हमें उन स्वतंत्रता सेनानियों को याद करते हुए उनके जीवन से प्रेरणा लेकर राष्ट्र की उन्नति में अपना योगदान देने का संकल्प लेना है।

अध्यक्षता करते हुए आर्य युवा नेता विकास गोगिया ने कहा कि देश विकास की ओर बढ़ रहा है और इसके नवनिर्माण में हम सभी युवाओं को आगे बढ़कर इस पुनीत कार्य मे अपना सहयोग करना होगा।

प्रान्तीय महामंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि आज देश की फिर से विश्वगुरु वाली छवि बन रही है। भारत विश्व का मार्गदर्शक बन कर नेतृत्व कर रहा है। आज देश की सेनाओं में आत्मबल व आधुनिक उपकरणों का कोई अभाव नही है।

प्रधान शिक्षक सौरभ गुप्ता ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया और सभी का आभार व्यक्त करते हुए सभी को ७४वें स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ दीं।

माता सुलोचना देवी, प्रवीन चावला, राजश्री यादव, देवेन्द्र गुप्ता, किरन सहगल, वीना वोहरा, संध्या पाण्डेय आदि ने ओजस्वी गीतों से समा बाँध दिया।

आचार्य महेन्द्र भाई, सत्यवीर चौधरी, यशोवीर आर्य, प्रकाशवीर शास्त्री आदि उपस्थित थे।

- प्रवीन आर्य, प्रेस सचिव, सम्पर्क- ९९११४०४४२३

वैदिक संस्कृति प्रचार संघ उदयपुर द्वारा सघन डिजिटल प्रचार

कोरोना काल में जब सभी गतिविधियों पर विराम लग गया है, और आगे भी अनिश्चित ही है कि यह स्थिति कब तक रहेगी, ऐसे में आर्यसमाज के समक्ष भी यह प्रश्न उपस्थित हुआ है कि हम प्रचार-प्रसार कैसे करें? ऐसे में डिजिटल तकनीक का सहारा लेकर स्थान-स्थान पर प्रचार कार्यक्रम किये जा रहे हैं। उदयपुर में भी वैदिक संस्कृति प्रचार संघ, उदयपुर, जिससे कि उदयपुर की सभी आर्यसमाजों के पदाधिकारी जुड़े हैं, ने यह बीड़ा उठाया है। गूगल मीट एप की सहायता से प्रतिदिन स्थानीय विद्वानों तथा सप्ताह में एक दिन राष्ट्रीय स्तर के विद्वानों के प्रवचन-श्रवण का लाभ संघ के उद्योग से सत्संग प्रेमी सज्जनों को मिल रहा है।

इस प्रकल्प के लिए उदयपुर के सभी आर्यजन बधाई के पात्र हैं। डॉ. भूपेन्द्र शर्मा, जिग्नेश शर्मा, सरला जी गुप्ता, सत्यप्रिय जी, वेदान्शु अवनीश मैत्रि, धीरज अरोड़ा का पुरुषार्थ विशेष सराहनीय है।

स्वतन्त्रता दिवस पर वृक्षारोपण किया

७४वें स्वन्त्रता दिवस पर भारतीय स्टेट बैंक, जोधपुर के द्वारा आर्य समाज मन्दिर, महर्षि पाणिनिनगर, मगरा पूँजला में वृरोपण किया गया। प्रधान कैलाश चन्द्र आर्य ने बताया की मुख्य अतिथि श्री सुजीत कुमार उप प्रबंधक, विशिष्ठ अतिथि श्री टीकमसिंह गहलोत, श्री मानसिंह कच्छवाहा-सहायक महाप्रबंधक व श्री राजेश गहलोत शाखा NLU शाखा प्रबंधक भारतीय स्टेट बैंक जोधपुर के द्वारा वक्षारोपण किया गया और प्रकृति को बचाने के लिए संकल्प लिया गया। प्रशासनिक कार्यालय द्वारा पाक विस्थापित जरुरतमंद लोगों को सूखी खाद्य सामग्री वितरण की गई, अतिथिओं को महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक प्रदान की गई। इस कार्यक्रम में आर. पी. शर्मा, कैलाश गहलोत, योगेन्द्र कच्छवाहा, जगदीश गहलोत, विजय गहलोत, अशोक गहलोत, देवेन्द्र पाण्डेय, गणेश शर्मा, प्रकाश, मंत्री नरेन्द्र आर्य, सोहन सिंह, सच्चिदानन्द, चेतनप्रकाश बैंक स्टाफ व समाज के सदस्यगण उपस्थित थे।

हलचल

भारतीय संस्कृति के प्राण मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के विषय में ऑनलाइन गोष्ठी सम्पन्न

अध्यात्म पथ (पं.) मासिक पत्रिका के तत्वावधान में ऑनलाइन 'भारतीय संस्कृति के प्राण मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम' विषय पर विशाल गोष्ठी एवं भक्ति संगीत का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रख्यात वैदिक विद्वान् आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी ने समस्त देशवासियों को श्रीराम भूमि पूजन एवं शिलान्यास और मंदिर निर्माण कार्य आरम्भ पर बधाई एवं शुभकामनाएँ दीं तथा उन्होंने कहा भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने श्रीराम मंदिर का भूमिपूजन कर कोटि-कोटि भारतीयों के मनों में नया आत्मविश्वास भर दिया है। आगे अध्यात्म पथ के सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने सम्बोधित करते हुए कहा श्री रामचन्द्र जी महाराज ने अपना समस्त जीवन पंचमहायज्ञों के अनुसार ही जिया।

१. संध्या करना, २.देवयज्ञ करना, ३. पितृयज्ञ करना- माता-पिता की सेवा करना , ४. अतिथियज्ञ करना, ५.बलिवैश्वदेवयज्ञ करना, जिनको इन्होंने पूरी आयु निभाया। बाल्मीकि रामायण में लिखा है-

एकायामवशिष्टायां रात्र्यांप्रतिबध्य सः।
पूर्वं संध्यामुपासीनो जजाप सुसमाहितः।।

अर्थात् (राज्याभिषेक से पूर्व वशिष्ठ मुनि के उपदेश के बाद) श्रीराम ने प्रातःकाल मुहूर्त में उठकर एकाग्र मन से प्रातःकालीन संध्या व जप किया। राष्ट्र किंकर के यशस्वी सम्पादक डॉ. विनोद बब्बर जी ने कहा राम आदर्श हैं। सोलह गुणों से परिपूर्ण हैं। लेकिन वनवास में जहाँ वे लगभग साधन हीन हैं। सेना तो क्या सलाहकार तक नहीं, वहाँ वे भीलों, आदिवासियों को अपने साथ जोड़ने में सफल ही नही होते हैं, बल्कि उस काल के सर्वाधिक शक्तिशाली शासक रावण को परास्त करने में भी सफल होते हैं। सबको साथ लेकर चलना और सभी का सम्मान करना श्रीराम से सीखा जा सकता है।

अन्त में कार्यक्रम के संयोजक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने सभी का धन्यवाद करते हुए कहा -

भूमण्डल की असुर वृत्तियों का तुमने संहार किया।
देश धर्म की मर्यादा रख, जगती का उपकार किया।।
अन्यायी रावण का वध कर धरती का उद्धार किया।
मानवता की गरिमा से, भारत-भू का शृंगार किया।।
विप्र-धेनु-सुर-सन्तों में भर दिया, अभयता का स्पंदन।।
राम ! तुम्हारा शत-शत अभिनन्दन।।

- अश्विनी नागिया (प्रबन्ध सम्पादक- अध्यात्म पथ)

हाथ चूमकर 'इलाज' करने वाले मौलाना की कोरोना से मौत, इलाज कराने वाले २९ मरीज पॉजिटिव

झाड़फूंक, टोना-टोटका और अंधविश्वास के सहारे धर्म-कर्म से भोले-भाले लोगों की बीमारी और समस्याएँ दूर करने वाले मौलवी साहब आपको बीमारी भी परोस सकते हैं। एमपी के रतलाम में ऐसा हुआ भी है जब एक संक्रमित मौलवी ने अपने भक्तों को भी कोरोना बाँट दिया। ऐसे ही एक असलम नाम के मौलाना की ४ जून को कोरोना के कारण मौत हुई। प्रशासन ने इस मौलाना के कॉन्टेक्ट तलाश कर लोगों को क्वारनटीन किया। जब इन सबके सैंपल लेकर जाँच के लिए भेजे तो शहर में कोरोना विस्फोट हो गया। इस मौलाना ने अपने मरने से पहले २६ लोगों को कोरोना बीमारी बाँट दी।

TV चैनल आजतक के अनुसार नयापुरा के एक मौलाना की कोरोना संक्रमण से मौत हुई थी। उस मौलाना के सम्पर्क वाले लोगों का पता लगाकर क्वारनटीन किया गया है। जब सैंपल लेकर जाँच के लिए भेजे गए तो नयापुरा के इस मौलाना के सम्पर्क वाले २६ लोगों को कोरोना पॉजिटिव पाया गया। ऐसे और भी मौलानाओं को पकड़कर क्वारनटीन किया गया। सभी को सभी सुविधाएँ दी जा रही हैं और उनके सैंपल लिए गए हैं। जाँच रिपोर्ट का इन्तजार है।

रतलाम के नयापुरा का यह मौलाना झाड़फूँक करता था और ताबीज देता था। लोग बड़ी संख्या में इसके पास जाते थे और यह कभी-कभी लोगों के हाथ भी चूमता था।

क्वारनटीन सेन्टर में इन मौलानाओं की शिकायत है कि उन्हें यहाँ कोई सुविधाएँ नहीं दी जा रही हैं। इनकी कोई जाँच भी नहीं की गई है। इन मौलानाओं का कहना है अभी वो कोरोना महामारी के कारण सब काम बन्द कर चुके थे। फिर भी हमें पकड़कर यहाँ लाकर बन्द कर दिया गया है।

★ शोक–संवेदना ★

बड़े ही दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि वैदिक विद्वान् श्री सुमन कुमार वैदिक नहीं रहे।

ग्रेटर नोएडा के एक हॉस्पिटल में श्री वैदिक जी का आकस्मिक निधन हो गया। वे पिछले सात-आठ दिनों से बीमार चल रहे थे तथा वहाँ आईसीयू में एडमिट थे। उनका अंतिम संस्कार 19 अगस्त 2020 को पूर्वाह्न 11 बजे ग्रेटर नोएडा में किया गया।

श्री वैदिक जी आर्य समाज तथा ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त जी के प्रति समर्पित रहे। वैदिक कर्मकाण्ड, यज्ञ तथा आर्ष साहित्य में उनकी गहन आस्था थी। आर्यावर्त्त केसरी के प्रचार-प्रसार में वह बड़े ही मनोयोग से हमेशा जुटे रहते थे। उनके आकस्मिक निधन से आर्य जगत् को अपूरणीय क्षति हुई है। न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार अपनी हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हैं कि ईश्वर उनकी आत्मा को सद्गति व शान्ति प्रदान करें तथा शोक संतप्त परिजनों को इस दुःख की बेला में शक्ति, सामर्थ्य व धैर्य दें।

कर्म-फल अवश्य भोगना पड़ेगा

जीव के कर्म स्वातंत्र्य के सिद्धान्त को पूर्णतः न समझने के कारण कुछ लोग यह कहते हैं कि ईश्वर मनुष्य को पाप करने ही क्यों देता है जैसे ही वह गलत कार्य करे वहीं ईश्वर उसे रोक दे। परन्तु अगर ईश्वर ऐसा करे तो जीव की कर्म करने की स्वतंत्रता का हनन होगा। एक तथ्य स्मरण रखने योग्य है कि स्वतंत्रता ही व्यक्तिगत उन्नति का भी कारण होती है। अगर सब कुछ परमात्मा के द्वारा होगा तो जीव उन्नति के प्रयास क्यों करेगा? उदाहरण द्वारा इस बात को समझें।

जीव स्वतंत्र कर्त्ता-

जो पूर्ण ईश्वर के द्वारा धारण किया गया, आकाश आदि में प्रयत्नशील रहता है, बुद्धि आदि सबको प्रकाशित करता है और ईश्वर की व्यवस्था से अपने किए हुए शुभ-अशुभ आचरण वाले कर्म का सुख दुःख रूप फल भोगता है, वह इस शरीर में स्वतंत्र कर्त्ता और भोक्ता रूपी जीव है, ऐसा मनुष्यों को जानना चाहिये। - ऋग्वेद १/५८/२ के महर्षि दयानन्द कृत भाष्य से।

एक अध्यापक कक्षा के सभी विद्यार्थियों को समान रूप से शिक्षा प्रदान करता है। परीक्षा के अवसर पर जब विद्यार्थी प्रश्न-पत्र हल कर रहे होते हैं, तब अध्यापक देख रहा होता है कि कई विद्यार्थी गलत उत्तर दे रहे हैं। पर वह उनको सही उत्तर नहीं बताता। परीक्षोपरान्त वह सभी को उनके द्वारा दिए गए उत्तरों के आधार पर अंक प्रदान करता है। कल्पना कीजिये अध्यापक उन विद्यार्थियों को जो कि गलत उत्तर लिख रहे थे सही उत्तर लिखा दे, तो परीक्षा का अर्थ क्या रहेगा? तथा यह भी होगा कि यह सोचकर कि अध्यापक महोदय सही उत्तर बता ही देंगे परीक्षा में अधिकाधिक अंक लाने हेतु घोर परिश्रम कोई भी विद्यार्थी क्यों करेगा? ठीक यही व्यवस्था परमपिता परमात्मा की है। उसने मनुष्य मात्र को वेद के माध्यम से पाप और पुण्य का ज्ञान करा दिया है। यही नहीं कर्म करते समय अच्छे बुरे की पहचान पुनश्च अन्तः प्रेरणा के रूप में कराता है इसके पश्चात् जीव के कर्म करने में वह कोई हस्तक्षेप नहीं करता चाहे वह घोरतम कुकृत्य ही क्यों न करे। तत्पश्चात् जैसा जो करता है तदनुरूप फल उसको अवश्य देता है। फल प्रदान करना उसने अपने अधीन रखा है।

यह स्पष्ट होने के पश्चात् कि जीव कर्म करने में स्वतंत्र है जीव के स्वरूप तथा ईश्वर से उसके सम्बन्ध को भी समझना चाहिये। महर्षि दयानन्द के आविर्भाव के समय इस विषय में भी काफी भ्रम फैला हुआ था। कोई केवल ब्रह्म की सत्ता को स्वीकार कर जीव को ब्रह्म का ही अंश मानता था तो कोई जड़ में ही स्वयमेव चैतन्यता का पैदा हो जाना मानता था। किसी की मान्यता थी कि जड़ तथा जीव दोनों ही ईश्वर में से ही निकलते हैं। इस भ्रम की स्थिति को महर्षि दयानन्द ने दूर करते हुए वेद के प्रमाण से ईश्वर, जीव व प्रकृति (कारण रूप) इन तीनों पदार्थों को अनादि माना।

जीव नित्य है-

न नूनमस्ति नो श्वः कस्तद्वेद यदद्भुतम्।
अन्यस्य चित्तमभि संचरेण्यमुताधीतं वि नश्यति॥

- ऋग्वेद १/१७०/१

जो जीव होकर न उत्पन्न होता है और न नष्ट होता है तथा जो नित्य, आश्चर्ययुक्त गुण-कर्म-स्वभाव वाला, अनादि और चेतन है, उसको जानने वाला भी कोई आश्चर्ययुक्त (विरला) ही होता है।

यह मान्यता ही तर्क व युक्ति के धरातल पर भी स्थिर रह पाती है।

ईश्वर तथा जीव की समानता व असमानता के बारे में ऋषि लिखते हैं- 'दोनों चेतन स्वरूप हैं। स्वभाव दोनों का पवित्र, अविनाशी और धार्मिकता आदि है, परन्तु परमेश्वर के सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, सबको नियम में रखना, जीव को पाप-पुण्यों के फल देना आदि धर्मयुक्त कर्म हैं और जीव के सन्तानोत्पत्ति, उनका पालन, शिल्पविद्या आदि अच्छे बुरे कर्म हैं। ईश्वर के नित्य ज्ञान, आनन्द, अनन्त बल आदि गुण हैं और जीव के (इच्छा) पदार्थों की प्राप्ति की अभिलाषा, (द्वेष) दुःखादि की अनिच्छा, वैर (प्रयत्न) पुरुषार्थ, बल (सुख) आनन्द (दुःख) विलाप, अप्रसन्नता (ज्ञान) विवेक, पहचानना (प्राण) प्राणवायु को बाहर निकालना (अपान) प्राण को बाहर से भीतर को लेना (निमेष) आँख को मींचना (उन्मेष) आँखों को खोलना (जीवन) प्राण का धारण करना (मन) निश्चय, स्मरण और अहंकार करना (गति) चलना (इन्द्रिय) सब इन्द्रियों को चलाना (अन्तर्विकार) भिन्न-भिन्न क्षुधा, तृषा, हर्ष, शोकादियुक्त होना, ये जीवात्मा के गुण परमात्मा से भिन्न हैं।' - सत्यार्थ प्रकाश-सप्तम समुल्लास

- अशोक आर्य
नवलखा महल, गुलाब बाग

Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 September-2020 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

हम इस स्वप्रकाशस्वरूप, अनादि, सदा मुक्त परमात्मा का नाम पवित्र जानें। जो हमको मुक्ति में आनन्द भुगाकर पृथिवी में पुनः माता-पिता के सम्बन्ध में जन्म देकर माता-पिता का दर्शन कराता है।

- सत्यार्थ प्रकाश, नवम समुल्लास पृष्ठ २३९

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर